१८६

दमनारोहणविधि

ASHA ARCHIVES
3243

१ॐ नमः॥ श्रीगुरुपादुकाभ्याः॥
नं॥ दमनारोहनी॥ ॥
दवपंक्षाल, तस्मानंद्धूनकाय ब
नित्यकर्म्मयाय॥ ॥माहापात्र
र्द मनश्रूलिस्नान॥ ॥यमः
वा मोलकोविधीथेंसाय॥ ॥
कलेश॥ कुम्भ॥ यात्र॥ कौमारी॥
वलि॥ द्वल, न्यडमि मालको॥
क्रमवान, थिंधमूद, आदिनवि
धिथेंथासुंकय॥ थायश्सँनय॥
॥ ॥दिगयागंवमय॥ ॥क्षवा
दोगु, वन, सिंधव गजमया, स्ना
न, सम्पादका, दशदिगसँवाये॥
थलवसयविधि॥ ॥
गुरुस्थ, श्रामकुल, सोक्षुपदथ॥
द्वारु स्वकुल, योगिनी आ
दिन विश्वंकय॥ ॥गजमानः
पृथकाशनयावक्ष॥ ॥कर्म्मणु
वलम॥ ॥भूम्यादि॥
योयै॥ नमस्कार॥
न्यास॥ कलशपात्र, अर्घपात्रपूजा॥
॥ ॥कुलशुद्धि, आत्मपूजा॥ ॥
विघ्नत्रय३॥ ॥मालनीय(०ना॥
॥ ॥पंचवलिविय॥ शाशन, गर्भ
न॥ श्रीविश्वकाल्यादि॥ ॥नोवाय॥
श्रीसंवर्त्तानंद्रवाहन॥ ॥

ग्रिदवश॥ ॥दिगपूजा॥ ॥
गनाकलस, कुंरु, महापात्रपू
जा॥ ॥कर्म्मार्चिनयाय॥ ॥धू
प,दीप,नैवेद्य॥ ॥जाप॥स्तोत्र
॥नित्यकर्म्मयाङ्कानखाय॥ ॥
॥ ॥

दमनयामास्वस्तिवाचाय॥ ॥
सिंहलक्षायला,वस्तुसंस्काचया
य॥ ॥ओं नमोरुणवन्हिक्रूं कृ
क्रिकायैकांजौं हूं धावगुधी व
गुधावामुखिक्रूं क्लीं किलिरवि
श्वेयाद्दवी॥ ॥निवीङ्गनी॥किनि
रवि श्वेकाङ्कमायक्रः गुह्याय द
ट॥ ॥ब्राह्मण॥ ॥गुधावगुधा
वेगुधावामुखी वङ्कुपायस्वः
नैवकवचायहुं॥ ॥गुवसुन्ध
न॥ ॥किलिरविश्वेशाङ्कनाः
यज्रः गुह्याय फट्॥ ॥नाडन॥ ॥
सिंहलक्षायलासः,पंचगव्य॥ ॥
पंचयाद्दवन,नवकाथवाय
यङ्कवासन॥ ॥पंचपूजायाय
॥कंकामध्यवायपाद्दवी॥वन्
रुणवायनमः॥ वरुणनमः॥ ॥

॥ ॥दमनयसंकल्प॥ ॥
॥ ॥ श्र ॥ ॥

ईशाने २	पूर्व ९	आग्नेय ४
उत्तर ७	मध्य ५	दक्षिण ३
वायव्य ६	पश्चिम १	नैऋत्य ८

॥ ॥
ओं गंधूं श्री गुसोद्धृङ्क कंनैमध्य
यद श्री मन वायुयाद्दवी॥ ॥
मेम श्री य॥१ ॥ओं गंधूं श्री गु
सोद्धृङ्क हृं ईशानाय श्री द
मनवायुयाद्दवी॥ ओं श्री मा
न॥२ ॥ओं गंधूं श्री ईशा व
ङ्क संकवचाय श्री दमनवाय
याद्दवी॥३॥ श्री ॥ओं गंधूं श्री
ईशसोद्धृङ्क मंयमोयदम श्री
नवायुयाद्दवी॥४॥ ॥श्री॥
ओं गंधूं श्री सोद्धृङ्क लं०००
त्रायद श्री मनवायुयाद्दवी॥
पूर्व॥ श्री ॥ओं गंधूं श्री सोद्धृ
कों [illegible] दमन श्री वा
यायाद्दवी॥ [illegible] श्री ॥
ओं गं श्री सोद्धृङ्क नं आग्नेय दमन

श्रीकृष्ण

वायव्ये पादुकां ॥ न्यासः ॥ ॥
ऐं ग स्मां निं सौ ह्स्क्ष्म्ल्व्र्यूं वायव्ये
दम स्त्रीं नैरृत्ये पादुकां ॥ ॥
वायु स्त्रीं ये ॥ ॥ ॐ शिवाय ॥
कामो स्त्रीं य दमन वायव्ये पादुकां
॥ मध्ये ॥ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्क्ष्म्ल्व्र्यूं ॥
क्लीं स्मां स्मां दमन वायव्ये ॥
पादु स्त्रीं स्त्रीं कां ॥ लकाम ॥
दाव स्त्रीं स्त्रीं दथो सवच ॥
लखविये ॥ श्री संवन्नि ॥
॥ [illegible] ॥
दमनपूजा ॥ दनजपूवायनमध्य
वाव सनायनमश्रुपिश्रीयेजन ॥
मध्ये ॥ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्क्ष्म्ल्व्र्यूं क्लीं स्मां
स्मां श्री दमन वायव्ये पा स्त्रीं
॥ स्त्रीं दकां ॥ ॥ कां कीं कूं स्त्रीं ॥
॥ स्त्रीं कः स्मां श्री कामदेवा ॥
यपादुकां स्त्रीं ॥ ॥ वा वीं वूं वा
॥ स्मां श्री वायव्ये पादुकां ॥
॥ स्त्रीं ॥ ॥ अघोर ॥ वज्र ॥
व १ नीतित्रय ३ ॥ ॥ दादन ॥
ङ्ग ॥ ॥ अथ गोनपूजायन ॥ ॥
ऐं ग ह्रें सिद्धार्थे पादुकायै पादु
कां ॥ ऐं ग्लौं सद्धार्थे जानुद्वयं पा
दुकां ॥ ऐं ग ह्रीं विद्युल्लताये ड
नुद्वयं पादुकां ॥ ऐं ग ह्रीं लक्ष्मी

ह्रौं २

गुह्य पादुकां ॥ ऐं ग ह्रैं दीक्षाये ना
भी पादुकां ॥ ऐं ग ह्स्मौं मालिन्ये हृद
यं पादुकां ॥ ऐं ग ह्रें शिवाय कंठ
पादुकां ॥ ऐं ग ह्रैं वसुमरवाये मु
खं पादुकां ॥ ऐं ग ह्रौं नासा मुखना ॥
श्वे नासापुट द्वयं पादुकां ॥ ऐं ग
ऐं ग ह्रौं कदकाये कर्णद्वयं पा
दुकां ॥ ऐं ग ह्रूं रु लिका गोत्रा क
ये पादुकां ॥ ऐं ग ह्रैं मरवाल च ॥
शिपादुकां ॥ ह्रूं शिवादना ह्रूं ॥ ॥
॥ ॥
अथ न्यनसंपूजा ॥ ॥ ऐं ग ह्रौं स
र्वज्ञताये हृदयाये पादुकां ॥ ऐं
ग ह्रीं अमृतकरा मालिनी ह्रूं शि
शिरसस्वाहा ॥ ऐं ग ह्रूं अघदवद
शिखना दिवाध शिखाये वाषट् ॥
ऐं ग ह्रैं वज्रिनि वज्रधरायक्ष्म
कवच वायहुं ॥ ऐं ग ह्रौं शाशनि
यशलकनकि नकि गदुअंग
विकनेत्रत्रयं यादुकां ॥ ऐं ग ह्रें न
मस्तुयं अनक नकि लिलि ह्रूं म ॥
हायाशुधमास्त्राय सह श्री काय ॥
ह्रूं फट् ॥ ॥ ह्रूं शिषतङ्ग ॥ ॥
मूलमंत्रेण कुलनायिका श्रीधावन ॥
अमृतेश्वाय विधुद कामदवाय ॥
धोमह नमो दमनप्रवादयात् ॥

॥ ॥हृदयादिन संपूज्य॥ आवा॥
हनादि॥धेनुमुद्रा॥ ॥जाप॥ ॥
स्वाहा॥१०॥ ॥स्तोत्र॥श्रीसंवर्त
॥ ॥ॐ दमनाङ्गमनादिपाथनि
र्व दमणा पनासनी मण्डलं पू
र्व्वं कृत्वा साष्टाङ्गेन महासदा
॥जगन्नाथ महेशानि परमात्म
खिलप्रभो॥कर्त्रानिदामनं पूजा
महायपलिपूर्विता॥त्रैविश्वं कु
र्वन्तु ममादमनकिमानं निर्ल्लक्ष्यका
चामम॥वर्षं पायसमस्त्य धान
निमित्तेन नाथ प्रसन्नो हव॥
संसार क्रुयमीन होवविमलां
मान तमक्षाविकृ॥पुष्प हा
यनकर्मछिद्र समस्तं दाम
न्यूर्वंकर्म्मना॥ ॥स्तुत्र गंध
दि॥[redacted]॥ स्तोत्र॥श्रीसंवर्त्ता
॥ ॥प्रतिष्ठितानिदवर्ण॥
सुप्रतिस्थाहुत्रयं॥सालि॥
पेप्रतिष्ठानि यजामाना
यूथपय॥सर्नान्तु पिवन्द
लीनं संन्नावाश्च तथैवच
॥त्थामान सीहनायं स्वपू
त्र दसवान्धवी॥वक्रवैस र्व
दायथ छैव वायतमाख्तुर्त॥
॥ ॥लंछविग॥श्रीसंवर्त्ता॥

दमनयात्र कुलयादव नय
॥ ॥पूजा॥ आनन्दकुक्कि
वीयाधिय नयपृवीया
दका॥ ॥ष ॥
धेनुमुद्रा॥ ॥दमन अ
धिवासन गंधचन्दन स थ
हावकार्यं कय॥ ॥थवेरम॥
कनेक्कार्यं कय॥ ॥वाक्य॥ अ
घवाला हा कल्याणादि मासन
कत्र यादि॥ ॥ॐ आमन्त्रिताति
कालर्ण कालस्यासह देवन
गहनुदेवदवेण दमनं सिद्ध
नाम म॥ वहु कल्त्र समायुक्त
मृपकत्र समन्वितं॥नवपात्र स
सिद्धार्थ त्रवाक्षाद्यैव संनति॥
आमन्त्रिता मया हस्ता मनावा॥
स्तिमवाविका॥ विद्यापी०सम
स्कादि तथाभैरवदीपना॥म
मस्त कुलदवीया कुलपवी॥
समन्वितं॥ आमन्त्रिता मया स॥
वौ दमनं दापनागवान॥ आ
मन्त्रितानिदवर्या श्रीकुब्जिका
समन्वितं॥ब्रह्माण्यादि समायु
क्तं ज्ञानवृक्ष समन्वितं॥वटु॥
लोकमहादेवी लिघाक्षमद
नं मया॥ ज्ञानास्कानि विकाति

कृपानिमत्रसवया॥प्रायश्चित
विशुद्धार्थं कमयनीयवभश्वः
री॥प्रसिद्धं गंधदमनं नज्ञास
ज्ञानसङ्कुवी॥ ॥दथुलियाश
दानडर्ल्लवभादमनअधिवाः
सनड्डासङ्कय॥ ॥ ॥
जलपात्र॥ ॥अर्घपात्र॥ ॥
वीगार्चन॥ ॥पञ्चवलि॥ ॥
त्रिदवड॥ ॥दसदीग॥ ॥क
लस॥ ॥कुम्भ॥ ॥पात्र॥ ॥
त्रिशुद्धि॥ ॥गुरुमण्डल॥ ॥गं
भवनाव॥ ॥गुरुपंक्ति॥ ॥
श्रीकण्ठनाथ॥ ॥ब्रह्मान्यादि॥
ठ॥ ॥उग्रचण्ड॥ ॥वागेश्वः
री॥ ॥कर्म्म॥ ॥त्रिखण्ड॥ ॥
मूलस्थान॥ ॥प्रतिमा॥ ॥ख
ड्ग॥ ॥कुमवलि॥ ॥अधाम्नाय
॥ ॥माया॥ ॥छिन्नमस्ता॥ ॥
हेवज्री॥ ॥हेगवा॥ ॥त्रिपु
र॥ ॥सिद्धिलक्ष्मी॥ ॥
त्रिपुरसुन्दरी॥ ॥कालि॥ ॥
वाक्य॥अघवालाका कल्यया
दि॥ ॥आमन्त्रितानिदवशयाः
दि॥थवमंत्रनञ्जासङ्कय॥ ॥
॥ ॥ ॥आत्मअधिवासन

जपलयमन्त्र॥ ॥मतृक॥ ॥॥
वलिमित्रयज्ञ॥ ॥नवात्मा॥ ॥
कुलगायत्रि॥न॥ ॥दमनगाः
यत्रि न॥कामदेवायविद्महे ध
य नुर्धाय धीमहि तन्नोदमनप्रचो
दयात्॥ ॥वाक्य॥अघवालाका
कल्यायादि मायनक्रम॥आमः
न्त्रितानिदवर्शयादि॥ ॥नवा
त्मामन्त्रन आत्मअधिवासनमा
बाहयन्॥ ॥वलि॥वाकमहा
वलिनधूनया॥ ॥आवाहनाः
दि धेनुयानिमुद्रादर्शयन्॥ ॥
धूप॥दीप॥नैवद्य॥जाप॥स्तोः
त्र॥प्रसम्वली॥वैदसदा॥डम्बः
लंस्पृष्ट्वादीपलिंगमाद्यादि॥ ॥
अत्रगंधादि॥ ॥समयतर्पन॥ ॥
प्रीतिप्रमाण्यादि॥ ॥नालिया॥
इतिअधिवासनविधिसमाप्त॥
॥ ७ ॥
गुरुपादुकाभ्यानमः॥ ॥नालि
यज्ञ॥ ॥गुरुनमस्कार॥ ॥न्या
स॥ ॥जलपात्रपूजा॥ ॥अ
र्घपात्रपूजा॥ ॥कलशशुद्धि॥
आत्मपूजा॥ ॥दक्षिन दमन
पूजा॥ ॥द्वादशाङ्ग॥ ॥यतः

ज्ञनपूजा॥ ॥दमनगायत्रीध्या
वन॥ ॥प्रार्थनाजाय॥ ॥स्तोत्र॥
प्रार्थभदमनमूवाङ्कवन ४
आनघपृष्याहमं ब्रह्माद्यामपि
प्रगाथाजनमिन पूजाविधानस
जिदीक्षाकावनहकिङ्कावसः
फलं मिरव्यातुवबुद्धिम वेन त्वे
वविधनवाहनसूत्रे मस्सवपू
जाकयाम्॥ अधिवासननालव
गतश्चायक्कदामलं। यक्ष्मायहाः
वनार्वन्तु मफलं वैत्रमासक॥ व
दानिदीक्षादिफलं मनावाञ्छित
कामदं। नष्टब्रह्मगतिकृद दम
नानाममूत्तम॥ ननदमनसंज्ञा
व मन्त्र्वां पूजनसदा। हूः सा क
जवामनं नयपानकमावनं॥
तस्मात्सुप्रविधानानियावदकृर्द
तुनिवर्द॥ महापातकनस्यकं
नवालोपदीर्घमायुर्द॥ ॥अग्रः
गंधादि॥ ॥कलसस्थाद्द दः
मनकाकायमन्त्र॥ ॥ओं ओं
श्रीदमनकाल्यामि दूं फं
ह॥ पयादानंदाय॥ ॥
मूलषडंगेन॥ ॥गायत्रि ध्याः
वन॥ ॥दमनमालकायिवः

नक्षयकालङ्कय॥ ॥दूवन
दमनङ्कर्दय दउलिया॥
दाकंथनडलर्वदांङ्कयर्दः
य॥ ॥अथवावाहावास्यदि
मास नक्षत्र॥ वैलासयीथम
धूर्डेयादि॥ ॥
ओम्दमनजयवयमन्त्र॥ ॥
नवात्मा॥ ॥हादसांग॥ ॥
षडंङ्ग॥ ॥दमनगायत्रीध्या
वन॥ ॥हृदयादिन॥ ॥वा
ष्ट॥ अश्ववालाहाकल्पयादि
॥ ॥वैलासयी०मधूर्डेयादि
॥ ॥नवात्मामन्त्रण ओम्दम
नमोवाहयम॥ ॥आवाहना
दि॥ स्वस्वमुद्रा॥ ॥वलिकाङ्क य
॥ ॥समयवलि॥ ॥अजलादि
वलि॥ ॥चतुषष्ठियोगिनीव
लि॥ ॥नन्दिवलि॥ ॥महा
वलि॥ ॥मालकोप्रियाजलि
ङ्कय सकलसङ्क॥ ॥निर्वा
णङ्कय॥ ॥वाकमहावलि
नंधूनक॥ ॥वलिमधवन
ङ्कय॥ ॥आवाहनादि धेनु
मुद्रा॥ ॥ ॥अर्घदत्वा॥ ॥
ओंक्षमि॥ इद अलि अज्ञासत्ता हा
मेषस॥

कृण वकाट, गोय, श्वाल, ह्राड
लस्नान॥ ॥वाक्य॥ अश्ववाल
हा कक्ष्यस्यादि मायनक्षत्र्यादि
॥ ॥कैवल्यासयागिन्या वद
कंगणमाहकी। वक्रमश्च क्षिः
णानिया नमामियवमश्चवी॥
वसंक्कदामनं पूजा, दमणाम्र
वकावणी। ग्रहाणार्घमया दत्तं
शीघ्रं हवतु पूजनं॥ ॥गैरव
दूर्वाक्षतं पुष्पं फल कनकायुतं
वाक्कतं वीजपूर्णं गन्धवेवानि
वर्णी अलिवलिसहितं मन्त्रदाः
त्रिणवर्णं। दूर्व्यस्यावनक्षुप्र
तिसवदिमया दत्तमर्घ्य गृहाणं
ग्रामनृग्रामम्बिकस दविनरुय
हव देवदवीप्रसीद॥ अर्घ्यपु
देवदवशी पूर्णधमवमावनीय
ग्रहाणार्घमया दत्तं प्रसीदयवं
मश्चवी॥ ॥दवसकलक्षि अर्घ्य
विय॥ ॥गैरव गन्धमषं हवो
॥ ॥कणोतर्नन॥ ॥मद्धि सिद्धि
ववंदक्षि मध्वमा श्यामस्यदं अ
पुत्रादक्षिजसादं क्षि गुरुगंध क्षि
मसदा॥ दक्षिल क्ष्मी धनंधान्यंवा

फल क्षीघनयुनः॥ प्रमादात्वव
मग॥ नि शुद्धिकायवमश्चवी॥
॥ ॥त्वमसियवंकाली सिद्धिल
क्ष्मीस्त्वमव त्वमसियवमवगुं
डम्यवगुं त्वमव। त्वमसियवम
वाश्चं वागवागश्चवीत्वं मक
लनिहन्ति शत्रुं सर्वसिद्धिं ददाः
ति॥ पूर्णेश्चवी निणा नाथं कुक
श्ववी दसश्चवी॥ मियुवाहागक
णीव भक्तान्नायनमास्तुते॥ त्रि
द्धिसिद्धि ववंदक्षि मध्वमाश्या
श्यमस्यदं। पुत्रादक्षिजसाद
क्षं गुरुगंधक्षि दक्षिमा॥ दक्षि
लक्ष्मी धनंधान्यं वाथलक्ष्मीपु
नपुनः। प्रसादात्यवमश्चानं कु
क्षि कायवमश्चवी॥ ॥अत्रगं
धादि॥ ॥गैरवथाशव स्नान
स्नाय॥ ॥गोय, श्वाल, गुवा
यविय॥ ॥स्नात्र॥ कन्दर्पका
मनाथाय सर्वपापहरायच।
दमनीवाहयामयः क्षमस्वप
विपूर्णोकं ली॥ वनीनाथनमस्तुते
गृह्णक्षत्वनकामदं। ग्रहदुतद
मनावाहं अत्राषि धि फलीदद

द॥कामश्ववाकोमवनेगमुलि
विचस्यसाकालिनिद्यनमामि॥
दमनपूवाचयामिपविपूर्णयः
नि हलप्रदसान्ववश्चेतसंज्ञा॥॥
अत्रगंधादिधूपदीपगुर्ब्बनवि
धेपूजाविधानेनत्सर्वंपविपू
र्णमस्तु॥ ॥धूप॥दीप॥नैवे
द्य॥जाप॥स्तोत्र॥ ॥उबस्तुमि॥
श्रीसंवर्त्ता॥महामाया॥नित्यका
र्म्मया॥अत्रगंधादि॥ ॥पश्चिम
अष्टाष्टमहामाया॥श्रीसिद्धिल
क्ष्मी॥श्रीउग्रचण्डा॥श्रीगुह्यकालि
का॥श्रीत्रिपुरसुन्दरीमूर्त्त्या ब
र्द्धवर्द्धनदमनोत्थाहन॥देवार्च्च
नपूजानिमित्यार्थेन॥अत्रगंधधू
पदीपगुर्ब्बनिविधेनत्सर्वंपवि
पूर्णमस्तु॥ ॥तर्पण॥श्रीनिथना
थ्यादि॥ ॥समयतर्पण॥ ॥
अष्टाविंशतिथ्यादि॥ ॥अवि
नाशाद्यादि॥ ॥नासिच॥ ॥वि
चूतयज्ञ॥ ॥एकानेक अन्धः
पूर्वगनेथ्यादि॥ ॥वलिधयः
यिवनयाङ्काथय॥मवोलेन
य॥ ॥वलिदुवनयाङ्काथ

यमनव॥ ॥यिवनयावलिदः
गुस्यायधूनकाव॥वलिलाहाय
वाय॥ ॥गुवुमगुलयाङ्कवाढ
वसकमाप॥ ॥
धूपपूजा॥पञ्चतर्पण॥प्रसाद॥
समयविय॥ ॥दक्षिणा॥ ॥
इतिदमनोत्थाहनविधिसमाप्त
॥ ए ॥
नमाकुर्ब्बवात्रिदीपजागर्ब्बनेः
कालयन॥ ॥मालक्वाविधिथें॥
वसपाविधिधूनकावनय॥ ॥
नमासंकिकृकूयाविधि॥ ॥व
लिसजामान॥ ॥वलिस्वाय॥
नित्यकर्म्मयाय॥ ॥वगुजाग॥
र्ब्बने॥ ॥विधिथेंकामावीजा
गर्ब्बने॥ ॥क्रमसयाय॥धूनः
कावगजमानयात्राविशेषयाय
धूनकाव॥कामावि विसर्जने॥का
माविस्वाय॥ ॥वीनकाकृनधः
नक॥ ॥इतिदनोत्थाहनविधि
समाप्त॥ ॥शुभ॥ ॥

२७ ग्रंथि २७॥ ॥ह्रनुरुवव
या॥ अथ अंगुलि १८ तु २७ ग्रंथि ३
वंकि ३॥ ॥यंत्रमीवावाहिया
॥अथ अंगुलि ८ तु २७ ग्रंथि २७॥
माला॥ ॥अग्निया॥ अथ अंगु
लि ७ तु ७ ग्रंथि ७॥ ॥गौरुवव
नक्षाया॥ द्मनक ९ तुं १८ ग्रंथि ३
वंकि ३॥ ॥इडनद तु १८ ग्रं
थि ४ वंकि ४॥ ॥दुडनद तुं १०
८ ग्रंथि ४ वंकि ४॥ ॥अंगुलि
१७ तु ३०४ ग्रंथि १७॥ ॥अंगु
१३ तुं १०८ ग्रंथि १३॥ ॥
सिद्धिलक्ष्मीया॥ अंगुलि ८ तुं २०
ग्रंथि ८ मवथान॥ ॥
दुडवूप्रमान॥ तुं १०८ ग्रंथि ३८
॥ ॥दुजानुप्रमान॥ तुं ३४ ग्रं
थि २४॥ ॥दुनाडिप्रमान॥
तुं २७ ग्रंथि १२॥ दुहृदिप्रमान
॥तुं १०८ ग्रंथि २०॥ ॥छिन्नमस्ता
या॥ ॥ ॥
माबाया॥ अथ अंगुलि ७ तुं १०८
ग्रंथि २१ प्रथम॥ ॥अंगुलि ३
तुं ३४ ग्रंथि १४॥ द्वितीया॥ ॥
अंगुलि ३ तुं २७ ग्रंथि ७ तृतीया

॥अंगुलि ८ तुं २७ ग्रंथि ३ वंकि ३
गंगावनाव॥ ॥
॥जलपात्र तुं ७ ग्रंथि ७॥ ॥
अर्घपात्र तुं ७ ग्रंथि ८॥ थवरम
न्त्रनी॥ वलि॥ ॥कनिष्ठ अंगु
लि १२ ग्रंथि १२ बकयाद्की॥ ॥
अंगुलि १३ तुं १४ ग्रंथि १३ कुत्कया
द्की॥ ॥अंगुलि १८ तुं १८ ग्रंथि
१८॥ गंगवनाव॥ ॥मावली॥
सद्ववाणी॥ अंगुलि ८ तुं ८ ग्रंथि
८ याद्की॥ ॥अंगुलि ७ तुं १८
ग्रंथि १६ माहमना॥ ॥अंगुलि
७ तुं १८ ग्रंथि १६ निवनल॥ ॥
अंगुलि १२ तुं १७ ग्रंथि २४ वि
घ्नान्त॥ ॥अंगुलि ३० तुं २७
ग्रंथि ३२ आत्मनल॥ ॥अंगुलि
३४ तुं ३४ ग्रंथि ३४ गंगावना
व॥ थनपाद्कीधाय॥ ॥
अं ३ तुं १०८ ग्रंथि ३ वंकि ३ ह्रः
पुवयमन्त्र अधाव॥ क्षायहुं
मले॥ ॥अं १२ तुं १०८ ग्रंथि १०
यवथ॥

॥ ॥रत्नत्रया॥अक्षय अंगुलि ४ तु ०
तु १०८ ग्रंथि ३ वंकि ३॥ ॥सिद्धि
लक्ष्मीया॥अक्षय अंगुलि ५ ३ तु १०८
ग्रंथि ८ वंकि ८ नवधान॥ ॥
कालिया अधिवासन॥ ॥अक्षय
अंगुलि ८ तु ८ ग्रंथि १॥ धन कालि
या अधिवासन॥ ॥अक्षय अंगुलि
१ तु ५३८ ग्रंथि १०॥ प्रथम पवि
त्रक॥ ॥अक्षय अंगुलि १ ३ तु २३
५ ग्रंथि १३॥ द्वितीय पवित्रक॥
॥ ॥अक्षय अंगुलि ८ तु ११ ग्रंथि
६ तृतीय पवित्रक॥ ॥अक्षय अं
गुलि ५ १ तु ७ ग्रंथि ७॥ जपमा
ला॥ ॥अक्षय अंगुलि ३ २ तु ८ ग्रं
थि ३२॥ धन कालिया॥ ॥
मियूत्रया॥ तु २० ग्रंथि ३ वंकि
३॥ ॥वसुजागया॥अक्षय अंगु
लि ८ तु ८ ग्रंथि ८॥ ॥अक्षय अंगु
लि तु २८ ग्रंथि ४ वंकि ४॥ ध
न युयागया॥ ॥स्थालया॥
अक्षय अंगुलि ५ १ तु ३ ५ ग्रंथि ५
॥ धन स्थालया॥ ॥कामाचि
या द्वलाक १ तु ८ ग्रंथि यथासा
क॥ ॥शिखाया॥अक्षय अंगुलि

८ तु ३ ५ ग्रंथि ३ वंकि ३॥ वात
सया॥ ॥मारुकालया॥ अक्षय
अंगुलि १ ८ तु २० ग्रंथि ३ वंकि
३॥ ॥नावाया॥ अक्षय अंगुलि
८ तु १०८ ग्रंथि २ प्रथम॥ छिन्न
मस्ताया॥ अक्षय अंगुलि ८ तु २०
ग्रंथि २० माला॥ ॥ रवी
आदिन याना॥ अक्षय अंगुलि ८ तु
२० ग्रंथि ३ वंकि ३॥ ॥दृग्मान
प्रमान॥ तु १०८ ग्रंथि ३ प्रथम॥
॥ ॥[redacted]
दुङ्कूप्रमान॥ तु ३ ५ ग्रंथि २५
द्वितीय॥ दनाक्रिप्रमान॥ तु २०
ग्रंथि १२ तृतीय॥ ॥दक्षिणि
तु १०८ ग्रंथि ३ वंकि ५॥ ॥श्री
धार अंगुलि १ २ तु ५ ग्रंथि ५
॥ ॥दृष्टदय दक्षु तु ८ ग्रंथि
३ ५ ज्ञ पवीन॥ धन त्रिपूत्रया
पतिका॥ ॥आत्मपवित्र
क॥ अक्षय अंगुलि ५ १ तु १०८ ग्रं
३ थि ३॥ धन आत्मपवित्रक॥ ॥
॥
व वागया॥ अक्षय अंगुलि ८ तु २०

गतुबूमगुलया॥ ॥गुरुधाक्षि
यार्न अष्ट श्रीगुलि ११ तु २० ग्रंथि
३ वंकि ३॥ ॥धावधीयार्न अ
ष्ट श्रीगुलि ३ तु २० ग्रंथि ४ वंकि
४॥ ॥प्रोकस्नुयार्न॥ अष्ट श्री
गुलि १० तु २० ग्रंथि ३ वंकि ३॥
॥ ॥खड्गाधादियार्न अष्ट श्री
गुलि ६ तु २० ग्रंथि ४ वंकि ४॥॥
धनअरमाठ कायाऽ॥ ॥
कुगवनियार्न अष्ट श्रीगुलि ३ तु
२० ग्रंथि ३ वंकि ३॥ ॥श्रीरु नि
र्धुरुयार्न अष्ट श्रीगुलि ३ तु २०
ग्रंथि ४ वंकि ४॥ ॥वागीश्व
वीयार्न अष्ट श्रीगुलि ३ ग्रंथि ४
वंकि ४॥ ॥कर्म्मयोगिवनत
या अष्ट श्रीगुलि ४ तु ३५ ग्रंथि
४॥ ॥विद्यानन्दया अष्ट श्रीगु
लि १४ तु १६ ग्रंथि ३३॥ ॥श्रा
ल्मनन्दया अष्ट श्रीगुलि १६ तु
० ग्रंथि ३३॥ ॥भरवलाया अ
ष्ट श्रीगुलि २० तु ३० ग्रंथि ३॥ द
धनमान॥ ॥गम्भवनावश्च॥
अष्ट श्रीगुलि १२ तु ३४ ग्रंथि ३

वंकि ३॥ धन कर्म्मया॥ ॥
त्रिरत्नअया अष्ट श्रीगुलि ३ग
४ ग्रंथि ४ दधनमान॥ ॥मूल
स्कानया अष्ट श्रीगुलि १४ तु १०
ग्रंथि ३ वंकि ३॥ ॥गम्भवना
न अष्ट श्रीगुलि १० तु १० ग्रंथि ३
वंकि ३॥ ॥मूलदवीसङ्घर
श्रीगुलि १२ तु १० ग्रंथि ६ वं
कि ४॥ ॥श्रीदालतु ४ ग्रंथि
४॥ धनमूलया॥ ॥ ॥
पनिमाया॥ अष्ट श्रीगुलि १० तु
२० ग्रंथि ३ वंकि ३॥ ॥पनि
वाया॥ तु २० ग्रंथि ४ वंकि ४॥
॥ ॥कलम्बपनिया॥ अष्ट श्री
गुलि १० तु २० ग्रंथि ३ वंकि ३
॥ ॥मिखाया अष्ट श्रीगुलि ३ तु
२० ग्रंथि १६॥ ॥अष्ट श्रीगुलि
३ तु २० ग्रंथि १२॥ ॥अष्ट श्री
गुलि ४ तु २० ग्रंथि ६॥ ॥अ
ष्ट श्रीगुलि ३ तु २० ग्रंथि ३॥ ॥
अष्ट श्रीगुलि २ तु २० ग्रंथि ३॥ ॥
गम्भवनाव श्रीगुलि ३ तु २० ग्रं
थि ३ वंकि ३॥ धन मिखाया॥ ॥

यन्त्रिका कल्पविधिसमाप्त ॥
॥ ७ ॥
२ युक्तिकायायर्यायं कायायवि
धि ॥ ॥ लिखनतिथाय ॥ लिङ
थेथैवैगच्युङ्‌इयंवगव्यगः
यावयाय ॥ ॥ कृष्णनयूका ३
यावऊयवच ॥ मद्य ॥ गुधा व
॥ वरु ॥ वनी गी ३ ॥ नवात्मा
॥ कर्म्म ॥ मूलस्थान ॥ ङयव
ॐ ॥ सिद्धिलक्ष्मी ॥ त्रिपुर ॥ ॥
कालि ॥ कुलेगायत्री ३ ॥ ॥
थ्वनयुक्ति कायाना कायायविधि
॥ ॥
२ ननायुक्ति कायायविधि ॥ ॥
कंकिनि अंगुलि ३ गुं ९ ग्रंथि ०
जलपात्र अर्घपात्र आदिन व
लिमालकायापं ॥ ॥ लिंगार्चं
नयार्ग अंगुलि ७ गुं १० ग्रंथि २१
गमावनाव कलमया ॥ ॥
अंगुलि ७ गुं १३ ग्रंथि १५ सूर्य्य
या ॥ ॥ अंगुलि १२ गुं ७ ४ ग्रं
थि २ २ विष्णुया ॥ ॥ अंगुलि ६
गुं २० ग्रंथि ३ कर्म ॥ ॥ अंगुलि

७ गुं २० ग्रंथि १२ नर्म ॥ ॥ अंगु
लि ४ गुं २० ग्रंथि ११ स्वर्ग ॥ ॥ अं
गुलि ३ गुं २० ग्रंथि ११ जयर्म ॥ ॥
अंगुलि २ गुं २० ग्रंथि धार्म ॥
थ्वनखिवया ॥ ॥ थ्वनलिंगार्चने
॥ ए ॥
कत्रयाग्रस्य अंगुलि १० गुं २० ग्रं
थि ७ वंकिग ॥ ॥ वद्रकयार्ग ३
स्थस्य अंगुलि १० गुं २० ग्रंथि ७ वं
किग ॥ ॥ गणयार्गस्थस्य अंगु
लि १० गुं २० ग्रंथि ७ वंकिग ॥ ॥
कलशयार्गस्थस्य अंगुलि २४ गुं
१० ग्रंथि ७ वंकिग ॥ ॥ कुम्भ ३
यार्गस्थस्य अंगुलि २२ गुं १५ ग्रं
थि ४ वंकिग ॥ ॥ महायात्रया
र्गस्थस्य अंगुलि १२ गुं १५ ग्रंथि ७
वंकिग ॥ ॥ त्रिशुद्धियार्गस्थस्य
अंगुलि ८ गुं २० ग्रंथि ४ वंकिग ॥
॥ ॥ गुरुमण्डलयार्ग ॥ स्थस्य अं
गुलि १० गुं १५ ग्रंथि ७ वंकिगव
वी ॥ ॥ मंगला ॥ दधवमान ॥ गी
गावनावस्थस्य अंगुलि ९ गुं १०
ग्रंथि ४ वंकिग ॥ दधवमान ॥ थ्व

ह्रौं कुलवृक्षेभ्यो पादुकां ॥
॥ सर्वगंधपूजा ॥ थ्वमनं व:
लि ॥ ॥ ह्रूं वटवृक्षायनम
ः॥ ह्रूं वकुलायनमः॥ ह्रूं चम्पका:
या लायनमः॥ ह्रूं निम्बाल्याय
ञ्जिकायायनमः॥ ह्रूं चकमा
लायनमः॥ ह्रूं मृगवयञ्जिका
वायनमः॥ ह्रूं कमसाक्किनन
मः॥ ह्रूं सीहावीयनमः॥ ॥
पूनिकोस्नाय ॥ ॥ पवित्रका:
तु ९ ग्रीथि० ॥ तं २ ग्रीथि २ वीकि
८ ॥ वाद्य ॥ कृष्यवालाका:
ल्यस्यादि ॥ आमन्त्रिमाल्दिव
लिस्यादि ॥ ॥ मूलमन्त्रनं स्नाः
य ॥ थ्वनं वलि ॥ त्वोकमल्लाव:
लिन धून्नकं ॥ ॥ धूप दीप ॥
जाप ॥ ह्रौं स्वाहा १० ॥ ह्रौं स्वाहा
१० ॥ ॥ ह्रीं स्वाहा ह्रीं १०८ ॥
॥ ॥ स्नाय ॥ तुवस्तु
नि ॥ त्रिदेव ॥ श्रीसम्वर्का ॥ व
शुमूलिकनं तुथ्यं वर्मावास
नदीपिकं ॥ गजवर्मध्वदेवं
वस्तुनाथ नमास्तुत ॥ कुत्र गी

आदि ॥ ॥ नर्ययुना ॥ वीतिश्रका ः
आदि ॥ धकाजनक ॥ कुम्भपू
र्वगनं ॥ ॥ वेदकागनं वलिवि
सर्ज्जनं ॥ ॥ सविनवलक ॥ व
कुकागनं वलिनं स्वासवायक
वस्त्राय ॥ ॥ वीवरुनस्मानादि:
नयाय ॥ ॥ कुलिवृक्षगागविधि
समाप्त ॥ ७ ॥
नमोकामावीकामवर्तविधि ॥
थ्यैयाय ॥ कुक्कवपूजास, सूनि
गोववृलिकास्नाय ॥ वाद्य ॥ का
मादीमूलमन्त्रन ॥ धूप ॥ दीप ॥
नैवेद्य ॥ जाप ॥ स्तोत्र ॥ ॥ जग
मानस्वस्तिकसनाय ॥ निर्वद्यना
दि ॥ वन सिंदूर सगोन भाव
नी स्वानविय ॥ आशिर्वाद ॥ ॥
वंसकाय ॥ पूर्नवक्त्रादि ॥ कु:
कुवोकायाव कुमनयाय ॥ ॥
सम्पूर्णधूनकाव, कामावीकु:
गविसर्ज्जनयाय ॥ ताहवाल
विधिथ्येंस्नाय ॥ ॥ कामावीकु
गायी० सस्नाय ॥ पुवा ॥ साक्षि
थाय ॥ समयकाश ॥ ॥ श्री ह्रं नि:

धूपंविद्रसिधयनमाय॥ ॥
पञ्चवासनस्वस्तिकयाय॥ह्व
नयल्कोणवायाय [illegible] गव खव॥
मण्डबधायन॥स्वस्तिकसकाटो
यनय॥वलिपात्र॥ ॥हृ२न्यवः
नपूर॥अर्घपात्रनय॥ ॥लीव
नड़ाय,यन,सिंध गजामको॥
स्थानखल॥पूजनी॥ ॥अर्घादि
॥सूर्यार्घ॥गुवूनमस्कार॥न्यास
॥ह्रूं कुलवज्रेश्वराय अस्त्राय
फट्॥ह्रूं कुलवज्रेश्वराय
कायनमः॥ह्रूं कुलवज्रे
श्वराय नाभिकायनमः॥ह्रूं
कुलवज्रेश्वरायनमः॥ह्रूं कु
लवज्रेश्वरायकर्ण्यायनमः॥
ह्रूं कुलवज्रेश्वराय श्रोत्राय
नमः॥ह्रूं कुलवज्रेश्वराय क॥
वचवर्ण्यायनमः॥ ॥ह्रूं कुल
वज्रेश्वरायऊर्ध्ववक्त्रं योदिय
क्त्रंन्यास॥ऊर्ध्ववक्त्र॥पूर्ववक्त्र॥
दक्षिणवक्त्र॥उत्तरवक्त्र॥प
श्चिमवक्त्र॥पवायववक्त्र॥वः
क्त्रंन्यास॥ ॥ह्रूं कुलवज्रेश्वरा

यद्धदयादिमतङ्गन्यास॥ ॥
कलशपात्रपूजा॥अर्घपात्रपू
जा॥ ॥कलशशुद्धि॥ ॥आत्मपू
जा॥ ॥आसनकलशआवाहनः
त्रिदव३॥ ॥आत्मपूजा॥ तेग ह्रूं
गणपतयनमः॥ह्रूं गुरुभ्यो नी
मः॥ह्रूं कुलदेवतायनमः॥ह्रूं श्री
धावनकयनमः॥ह्रूं अनन्तासना
यनमः॥ह्रूं स्कन्दासनायनमः॥ह्रूं
नालासनायनमः॥ह्रूं कमलासना
यनमः॥ह्रूं कर्णिकासनायनमः॥
ह्रूं पद्मासनायनमः॥ह्रूं कुलवज्रे
श्वरासनायनमः॥ह्रूं कुलवज्रे
श्वरायनमः॥ ॥ध्यान॥मध्य
मस्यकचूयासा कुलवज्ञलका
मिनी॥द्विभुजास्यामवर्ण्णंच खड्ग
खट्वाङ्गधारिणी॥ एनत्रयविरि
भीड़ी पद्ममध्येविचिन्तयत् ॥
निर्म्मालयं सर्व्वदेवानां वज्रनाथः
निवेदयत्॥ध्यानपुष्पनमः॥ ॥
त्रियीकालिः॥ ॥ह्रें क्रीं श्रीं फ्रुं
श्रीं ह्रूं ख्यां ख्रां कुलवज्रेश्वरि
वायपा ह्रूं ह्रीं द्रवी॥ह्रूं ॥

त्रिपुरसुन्दरी मूर्द्धस्थाववर्थव॰
द्धन यविक्राथाकनवखार्चन
विधेमन्त्र र्वयविपूर्ण्णमस्तु॥
नर्यला॥प्रीनिम्रन्तायादि॥ ॥
गनथार्वसकवदनर्यन॥ ॥
अस्याविंशतिकर्म्मानीयादि॥॥
अविनासायादि॥विन्दुत्रयअ
पकानक॥गुभ्रपूर्वगन॥ ॥
वलिविसर्ज्जनेयिवनयाडका
॥द्रवनमवलिमनव॥ ॥
वायय॥निकलीरवनक्वायाव॰
मायालदी॥ ॥आवार्यन
डलवदेगुलियाया॥डयवअ॰
सकर्म्मरवदावयाय॥ ॥सिद्धिल
क्ष्मीया॥कालिया॥त्रिपुरसुन्दर
याथनसकर्म्मरवदावपूजायाय
॥वलिविय॥ ॥जजमाननत्रि
यांजलियावक॥ ॥त्वाकमदा
वलिनधूनक॥धूप॥दीप॥नैव
द्य॥जाप॥स्तोत्र॥ ॥पुपयूजा॥॥
यगुनर्यला॥ ॥जजमानप्रासाद
समयविय॥आवार्यपूजा॥ द
क्षिणा॥वलिथय॥वलिछाय॰

यी०म॥ ॥ ङ्कनियवित्राला दन
दवार्चनविधिसमायनथो ॥
॥ ॥
दमाविधिथं वात्रिसदीपजा॰
गनकायन॥ थनदृथकङ्घया
विधिसमाप्त॥ ॥
संनिकाङ्घयाविधिवलिसजा॥
यन॥ ॥वलिथय॥वलिछाय॥
यंयवलियावदक स्कन्द्र सिद्धि
लक्ष्मी थंथलाखुस कालियापी
ठगुवाढलस॥थागिनी कथलीख
स॥वामुण्डा कलीकस॥गन थान
स॥ लंकासकलढ द्रवापिखा॥
थनवलिक्कीयविधि॥धूनक॥
नित्यकर्म्मयाय॥ ॥
वगुनामार्चनेविधि॥लयनस
वगुविक्रथाय॥ ॥काढालस
दिगपूजायाढायादकामडाव
नय॥विक्रथायाथपन विक्रथ॰
थेवासकीकाढामसंनय॥ ॥

लाक्ष सद्धिजस्था वीवक्षेवर्वी
नवनाथश्रुव डक्षुभ्रुमताम
श्च्यः स्ववर्व स्तुवर्व दिक्व
लगोवल्ल मन्त्रवर्व विद्याः
वर्व योगिनीस्य गुध्रायवक्र
निवासिनी स्थानमहः न्यथाः
ह्रीं क्रीं हूं ह्रूं ह्रौं क्रौं त्रीं हूं रूः ४
रूः ठ ॐ हूं हूं हूं दिश्वर्षश्च हि
सर्वसमयमण्डलवकस्थ वी
रमन्त्र गणविद्यासमाकुलः
ह्रि विह्रि वि ह्रि विह्रि वि रूः रुः
वीवी सर्वमा रूः गणसदिनः
कामसिद्धवन्तु सं कर्षनि का
लकालिडयवलमांसमय व
लियुगाय स्त्र रवनवस्तुय
रमय रघरलः महाम्युया
गेस्थवी समयस्थारूवर्द्ध रूः ठ
स्वाहा॥ हूं ह्रिसमदावलि॥ ॥
॥ ७ ॥
आत्मपवित्रक गुप्यजपमन्त्र॥
नवात्मा॥ ॥ श्री आनन्दन
ह्रि रूः वरानन्द श्री वीरात्रि
पनय श्री पादुकां॥

॥ ॥द्वादशाङ्ग॥ ॥ॐ तत्त्व॥
हृदयादिन्यासतत्त्व॥ ॥ऐं गुरु
भागवगि हृत्कमलायैः
श्रीं हृदयायादि॥ ॥गायत्री
ध्यान॥ ॥कुब्जिकायविघ्न
हृयादि॥ ॥शून्यवालादाकः
लयायादि॥ ॥कैलासपी० मः
धूर्लक्ष्यादि॥ ॥नवात्मामन्त्रन
आत्मपवित्रकमावाहयन्तु॥
॥ ॥नवावलिप्रदानं॥ ॥समय
वलि॥ ॥क्षेत्रपालादिवलि॥ ॥योग
थियोगिनीवलि॥ ॥वाङ्किवलि॥
महावलि॥ ॥निर्वाणवलि॥ ॥माल
कात्रियोगलिस्वाय॥ ॥वाकमहा
वलिनिधूनस्व॥ ॥गुरवाङ्घ्य
स्वस्थमूर्द्ध्वप्रदर्शयन्तु॥ ॥धूप
दीप॥ ॥नैवेद्य॥ ॥जाप॥ ॥स्तोत्र॥ ॥स्तु
स्तुति॥ ॥श्रीसम्वर्त्ता॥ ॥त्रिदेव॥
महामाया॥ ॥नित्यकर्मया॥ ॥
अर्घगन्धधूपदीप अर्चनपूजा
विधानेन सर्वपरिपूर्णमस्तु॥
यश्चिमयस्त्राश्च महामायाश्री
सिद्धिलक्ष्मीश्री उग्रकालिका

यक्रूँ क्रूँ त्रैल्लोक्यस्याम हूँ २ सिद्धि
२ ह्रीं २ धावय २ पुत्र धन धान्य
वस्त्र सुवर्ण हिरन्य दायक ३
ष्ट्रम मकान सिद्धि ददिव मका ६
गोविन्द निमहाम धावय सास्य
नूयाम सारुप्य सर्व्वदीपसम
स्त कर्म्म करी सिद्धिदाम तु पू
वय २ निधय २ अभीष्टं हीन्द्र ६
यदिद २ पुत्र धन आयुसोभाग्य
दद २ निधान्यं धान्यं हिरन्यं
दद २ सन्तनेव सर्व्वसिद्धि कु
~~ल पूजीमिनी सम्मोधन व्रक्ष~~
~~कीलित आकिया नवकालि~~
~~मर्त्तिसमरूपचजलालो~~ ॥ नूरक्रीं
२ स्त्रीं रुँ वनमयवर्द्ध २ सर्व्वान
यक्षान अंदसय २ आत्मायय २
प्रियवार्ध्द दद २ अविघ्नकूर २
नमामहामारकं वाशी क्रीं क्रीं ३
क्रीं रक्रौं २ स्त्रौं २ महाधनं दद ६
ममसर्व्व धनेश्वय सु २ सिद्धि ३
गौवीक्षं २ नमः स्वाहा॥ ॥
ह्रूं लिङ्गपूजाविधि॥ ॥ पूजि

कास्थय॥ वाश्व॥ अघवालाहं
कल्यस्यादि॥ क्रीं ला सयी ठिव्यो
दि॥ ॥ॐ हूँ सिद्धि कालालि
क्रौं क्रूँ क्रूं स्त्रीं हूँ नमः स्वाहा॥ ॥
गुह्य काालिकादव्याय पवित्र
कनपादू कांवुवी ह्रुयामिया
दु कांपूजयामि नमः॥ ॥
वलिविधियमन्त्र॥ ॥ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ
महाकृतन्यामहायागिनिस्याम
हासर्व्वमाठस्यामहासर्व्वदावि
निस्यामहासर्व्वकृत्यपतिस्याम
हास्वर्वी स्या महादिव्यीस्या
महाभैरवीस्यामहास्यामश्री
स्यामहामलायवकालिनिस्या
महास्वनृपदायी नीस्या हूं मीव
लिपूजा २ क्रू २ क्रौं हूं २ रूढू स्वा
हा॥ ॥पुनवलिविधियमन्त्र॥
॥ ॥ॐ क्रौं त्रैं क्रौं ह्रूँ वी ठेपवी
ठेकत्रायकृत्र संधाकृत्य संधा
क मलायाव्रमलाय वत्स्याबा
यवत्स्याव स्मानाय स्मान स्वाबा
यद्वाव स्मशानाय स्मशान त्रैः

नकालिह्रूं रूद्र गुम्हायाद ॥
॥ रूं रूद्रमहाबेष्णु बज्रगुमस्वी
त्रिभावनि सर्व्वसमयलायन:
ग्रामथि शम्भामूर्त्त अभिर्द्ध:
सायनिसिद्धिमाद्धिप्रेद नासय:
सद्धायान गुह्यमर्म्मप्रयच्छ:
सर्व्वसर्व्वेगेगूत्रूप सर्व्वरूप
ह्रींरूद्र रूं रूद्र हूंह्रीं क्रीं सर्व्व
विघ्ननाशी रूद्र स्वाहा॥१०० ॥
॥ गुना काक्रम॥ ॥
पुनजपवयमन्त्र॥ ॥त्रिंग:
रूं महावज्रयागेश्वरी गुम्हा
याद॥१०॥ रूं महाहासाका
लिकालि प्रसनकालिगुम्हा:
याद॥ ॥रूं रूद्रमहाजाव
नि सर्व्वाश्रयनकावनि सर्व्व
प्रकासकि सर्व्वप्रविनिवघ्न दि
कला हादनपविवर्जय मन्त्र
मन्त्र:स्वरूप यवीक्षानप्रद:
वम्भिरूप नल्लामिन गुवर्ण्ण
वर्ण्णविग्रह विद्यावहासकि
हासयर स्ववज्रवीखाव रव

रू:हूं:रू०रू०पूप्रहासा
रूस्वाहा॥१००॥ह्रिमसाक्र
र्मा॥ ॥वोक्र॥ पूमिकाछायम
क्रात्रिंग रूं महावज्रयागेश्व
वी गुम्हायाद॥ गुह्यकालिका
दव्यायपविक्रकन गुम्हायाद
कांतुवीच्छयामि पूजयामि॥
थनवालि॥ ७ ॥
पूधि ३२॥ जपवयमन्त्र॥ ॥
त्रिंग क्रींश्रीं वज्रयागेश्वरीव
ज्रपी० श्यामकालि मानक्षि:
नी ह्रिमकालि कामरूपिनि
सिद्धिकालि पूर्ण्णगिरी जाव
धव चन्द्रकालि उडियान व
हकालि सर्व्वसमयवक्रला:
रूं कुरूर सुसिद्ध सुप्रसन रश्री
प्रसन रहं स:स्व:स्वाहि ह्रिं क्रीं
हूं वाहिर कालिर स्वाहि रस्व
हूंलांखांखां लां हूं हूं हांवांक्रीं
श्रांहूं सौं प्रहूं हूं हूं हूं नम:पाद
कांपूजयामि नम:॥ ॥पुन:
जपवयमन्त्र॥ ॐ नमामहामा

क्ष्ठ शिकालि कालग्रसनका
लिग्रुम्वापाद॥ ॥ह्रीँ खुँ शित्र
मुतनिवाशव शिमन [illegible] रवव
ववविलिव ग्रकुल कुलरुवि
न [illegible] ववावविनिवरुवक्षे प
वपवापव सर्व्वाधिवकुलाक
ल भूच्यनारूमनाम्ननी क्षैव
लयवल्य निर्व्वानिग्रद्धबुद्ध
निवृपडपमावहिन निरव
कागपकालि कग्ध शिग्रवी
खुँ रुद स्वाहा॥१००॥ [illegible]
शिकमे॥ ॥पूनरूपल
पमन्त्र॥ ॥ह्रीँ खुँ महावज्र
या गेग्ध वीग्री गन्धायाद॥ ॥
पूनरुपवपमन्त्र॥ ॥खुँ
महावज्रया गेग्धवी ग्रुम्वाया
द॥ ॥ह्रूँ खुँ ह्रूँ ह्रीं महाशि
कि कालिग्रसन कालिग्रुम्वाया
द॥ ॥खुँ महारुवविसर्वा
श्रायकालिहिकिनि वाध सं
पूर्णल कानिरुवव ध्वनि सूद
नियवमसिद्धि गुद्ध बुद्धस्वरू
पमनाम्न नीनिवगा घन॥

क्ष सर्व्वग्धवीधाव विर्व्वद्धिकवक्ष
यविनिमावजानिधानमहाव
लयवाक्राम यथ ग्रामुवादि
नी ग्रुवनाववृप ब्रह्मीसीसा
हा॥१००॥ [illegible] निधिनिकमे॥ ॥
पूनरूपवपमन्त्र॥ ॥खुँ म
हावज्रया गेग्धवी गन्धायाद
॥खुँ ह्रूँ ह्रँ खं महासंहावका
लिग्रसनकालिग्रुम्वायाद॥ ॥
खुँ महावज्रग्धवी वज्रकर्म्म
साधनि सर्व्वग्रासघस्मविरु
गक्राधिकालनिमहाकालवि
ग्रह संक्रमनि महारूरुरुरुक
नि वृद्धक्राधनि सर्व्वमतृप्रम
र्दनि महापापप्रमावनि याग
सिद्धिप्रदायिनी ह्रागमाक्ष प्रः
धर्ह्रीं रुँ रु खुँ रुँ रु ह्रूँ प्रीं रु रु
रुगवनि संहाशग्धवी खुँ रु
रु स्वाहा॥१०१॥ [illegible] निसंहावक
मे॥ ॥पूजयवपमन्त्र॥ ॥
खुँ महावज्रया गेग्धवी ग्र
म्वायाद॥ ॥खुँ ह्रां ह्रीं महाग्र
नाक्षवज्रया गेग्धवी ग्रसः

खलकुमबुक
भीरदुगु
पाक्तुनाकुदुदु
पालसुद्धादुदु
कुलामल
कुस्याखा
त्रिकाउत्रिरुलासध
त्रिकाउत्रिरुलासध
लवादजिलखाल
थुकयाल
कुसुविकी
पाउलमाकसिल
हलेन्मालकलीया २
मलहासखज
भ्रमनमालकाखज
कुदनस्यकोबलखुन
थुसाछायाबलोया
नगल
धुबसखलमालका
पालसाधानमालका

२ पाख्वमां नाय
यापूखासा२

ASHA ARCHIVES 3243

मयीथयादि॥ ॥यंनिकाञ्चायस
फदशाक्षवीमन्त्रनपनिकाञ्चा
य॥ ॥मयरवरू०लमहावजु
याडागत्रगजसड१नपविन्नक
नपाद्रकांतिवीञ्चयामिपूजया
मिनमः॥ ॥थमन्त्रनेवलि॥ ॥
॥ ७ ॥
गीथि६॥ ॥जपवथमन्त्र॥ ॥
रवु रू०६ महानगावनिसर्वाधि
पनकावान सर्वविघ्नकासकोस
र्वसिवीशुरूहिकलावादगः
पविवलेय महमजस्वचुपः
यवाङ्कानग्रद वस्त्रिवुय गत्वा
लिन ग्रवर्ण्ण वर्ण्ण विग्रह वि
घ्नावजास जासय जासय रव
वववीरवा वरव हुं हुं रू०६ह
०रु०पजकामाम स्वाहा
॥१०॥पूनिवाञ्चयवाञ्च ॥
ञ्चयवाला हाकल्पयादि॥ ॥
वीलागयीथयादि॥ ॥
गीथि६१॥जपवथमन्त्र॥ ॥
रवु महावजुयागेम्प्रवीञः
मीयाद॥ ॥ॐरवु फुं हीं म

माहन्द्री, वामुण्डा, महालक्ष्मी॥
आहेश्वरी, माहामाये, सर्वसिद्धि
दायि, सर्वसंसार नाम नी वालाका
कामरूपनिवासिनी, श्मशान॥
हेवविप्रिय सुमनस आवहवि
घ निर्ह्रुं ह्रूं ह्रीं वैं ग्री कि ठिर॥
किलि २ हन २ दह २ ग्रस २ हुं॥
सिद्धहेश्वरी, सर्वयोगिनीनां॥
समवस का विनि श्ले लाक्ष वा॥
सिनी हेवविप्रिय समद मर्व
नयर्वंत वासिनी य ०० पथवा
सिनी सर्वगन जयविजय अ
जित अयवाजित ह्रुं ह्रीं नवु॥
निरुयमि हवनिद्रा वनिद्री
अमुमय समय द्विनारुक्व
हुं ह्रीं हेवसु द्विमङ्गे लाक्षमाम
आकाश वूह नमः स्वाहा॥ ॥
वाद्य॥ अय वाला हा कास्य व्या
दि॥ कीलामया थम ध्येयादि॥
॥ ॥नेवाकवी मन्त्र नपूनि॥
काङ्काय॥ ॥ह्रुं महावगुथा
ग मथवी गुह्यकालि कादया
यपवित्र कनह वी स्वयामि॥

पादकींयू रुया मितमः॥ ॥
ध्नेवलि॥ ॥
पृथिव्य॥ ॥जयवयमन्त्र॥
ॐ नमो भगवति वामगुह्ये
आरूढ सवये धाविनि हुं स्फु
विलि ध्रीं ह्रां गु ह्य कालि क्रु स
र्वकर्मकरी॥ हुं २ ह्रीं हुं हुं॥
रुठ वण्डपव ण्ड किलि २ कि
वि २ मारय २ स्फुय २ हन २
काव २ किरि २ ग्रस २ रुरु २
ह्रुं २ स्त्री २ ह्रुं आमय २ पूर्णा
वय २ निव्राव य २ श्रान हवि
२ शिव हा विमा व य २ आन
य २ स्वादय २ स्फुर २ फुं हुं मा
व २ श्रा २ माव य २ हन २ रुरु २
स्फु २ स्फु २ स्फुं २ म ४ २ खे ४ २
छि ४ २ छ ४ का २ लकी य भि मह
हेश्वरी हुं, मर्म स्फुटनि रुरु॥
ह्रीं २ रुरु २ वीद्र २ हुं ग रुठ॥
ह्रीं २ ह्लुं हुं मुर्म मर्मा विघाने
हन २ हुं उ हुं ग रुरु ग नमः स्वा
हा॥ ॥हृदयविद्याथ॥ ॥
अयवाला हा कास्य व्यादि॥ कीलं

महासिद्धिविद्याकुलयोगिनी
ॐमृतविद्याम्बाश्रीपादुकां ॥
॥ ॥श्रीथ्वर्वकोद्वां॥ऐं गरूं क्लीं१
स्वाम्नानेवाश्रय २ ह्रूं श्रीखासोम्बा
पादुकां॥ ॥श्रीं ८७५॥ ॥
यविवायवावेम्महानन्दश्रवि
श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीयवया
यवायवया सपर्य्यायासर्व्वचि
वावेम्महानन्दसंयुक्तिनास्तु स
नर्थिनास्तुसंस्तुस्तु॥ ॥
अथवालाहाकल्पयादि॥ ॥
कीलानपीथयादि॥ ॥श्रीश्रि
पुरसुन्दरिवालादवीपवीन
कनपादुकांपुजी कुयामि॥२॥
पूज्यामिनमः॥॥थमंत्रनेथवर
मन्त्रनेघलि॥आवाहनादि,या
निमुद्रा॥ ७ ॥ ॥
कालिया आयनमय॥ वीकिनी
ग॥ ॥रूं शिवाम्नायआम्बापाद
॥ऐं गरूं सयमण्डआम्नायआम्बाया
द॥ऐं गरूं कृतमण्डआम्नायआम्बा
पाद॥ऐं गरूं नकुरु गायमआ१
म्नायनमः॥ऐं गरूं द्वापरक्षः

गमण्डआम्नायनमः॥ऐं गरूं का
लिङ्गमण्डआम्नायनमः॥ऐं ग
रूं ऋग्वेदमण्डआम्नायनमः॥ऐं
गरूं यजुर्वेदमण्डआम्नायनमः॥
ऐं गरूं सामवेदमण्डआम्नायनम
ः॥ऐं गरूं अथर्ववेदमण्डआम्नाय
आम्बापाद॥ ॥ऐं गरूं ब्रह्म
नाम्नायनमः॥ऐं गरूं वैष्णव
नाम्नायनमः॥ऐं गरूं विष्णु
नाम्नायनमः॥ऐं गरूं रुद्रनाम
म्नायनमः॥ऐं गरूं ईश्वर
नाम्नायेनमः॥ऐं गरूं स
दाशिवनाम्नायेनमः॥ऐं
गरूं श्रीकुब्जिकाम्नायनमः
॥ऐं गरूं श्रीकुं रूं रूं महा
शिवाम्नायनमः॥ ॥श्रीथिन
॥जयजयमन्त्र॥ ॥ॐ नमश्च
मण्ड रूं कालकृतातियानन्दा
लंधनमहाकालकि, वक्षि
वागहीनगवेश्रनन्तु कालिनी
कर्णकृतमहाकर्णश्रूरमात्री
माहेश्वरी ब्रह्मायनी वैष्णवी
ऐन्द्रायनी, कौमारी, वाराही

मान४यननकुनवस्सलदकी
मह्राकालिका निनानि कृह्
ह्यणीदमदनाहुयाकुबु २
सुबासुबर्की न्यया क्रीँ श्रीँ क्रौँ ह्
ह्रदसाहा॥ नवथन॥ ॐ क्रीः
ह्रं हौँ हूँ क्रौँ क्रौँ नमः॥ ॥ग्रंथि
१७॥ ॐ नमः सर्वसिद्धियागि
नीश्यानमः सर्वसिद्धि माहत्म्या
नमातियः दिनानन्द न्धिनाथैः
सकलकुवचक्र नायिकायैरु
गवर्थ चण्डिका यालिन्यै नयथा॥
॥ ॥ग्रंथि १३॥ वर्ण्णसक्ताक्र
वी महादवी श्री सिद्धिलक्ष्मी पा
दुकां॥ ॥ग्रंथि ७॥ नेगवैक्रीँ
श्रीरुगवनि सिद्धिलक्ष्मी महा
मानि खुँ विषविनाशा वदम
यय वयवाय नक्रीँ हुँ विष ः
क्रादवनि वक्रीँ क्रौँ धनवाय
दहि२ यसव२ कृत्रसव२ मम
सिद्धिद हि२ क्रीँ कूँ हाँ हूँ ॐ उ
यवमहेसिनि क्रौँ महाथागि
निनमस्वाहा॥ बासछाय॥ ॥
॥ ॥ श्री महावप्रमनयं

कर्षणी कालिमर्थनि हूः म
कुदगश्मचौ ॐ क्रौँ कूँ ज्रौँ हूः
ऋाँ क्रौँ श्रीसिद्धिलक्ष्मी देवी पर्व
नकनयादकां पूजयामि नमः॥
॥ ॥ध्वमक्रनवलिं॥ ॥
॥ ७ ॥
त्रिपूजया ग्रंथि ३६॥ ॥स्नात्म
न॥ कं कीनी १॥ ॥पेक्षप्रनात्म
नायः॥ ग्रेग क्रूँ अग्निवक्त्रका
मशियालय ह्रीं श्रीमित्रीसना ः
थात्मिक श्री वीमध्ववीदवी ः
श्रीरुद्रात्मशक्ति श्रीपादुकां॥ ॥
ग्रंथि २५॥ क्ष्मूँ सूर्यवक्त्र श्री ः
गालिधन ह्रीं वी [illegible]
नाथात्मिक श्री वक्र [illegible]
दवी श्री वि[illegible]त्मशक्ति श्रीपाद
कां पूजयामि॥ ॥ग्रंथि १२॥
क्ष्मूँ सामवक्त्र श्री पूर्णगिरी ः
। ह्रीं वी ७ श्री जासनाथात्मिक
ः श्री कमालिनी देवी श्री
ब्रह्मात्मशक्ति श्रीपादुकां॥ ॥
ग्रंथि ७ वंकि ५॥ त्रि ग स्वच्छन्द
प्रकाशपविपूर्ण्ण परापरः

मन्त्र॥ॐ नायनायस्तु स्वाहा॥
पवित्रकनयाद्कांत विस्वया
मिपूजयामि नमः॥ थवश्मं
त्रनवलि॥ ७ ॥
नागयाग्रंथि २१॥॥ ॥मन्त्र॥
ॐ नामस्तुनामस्तु स्वाहा यो॥
द्वदशनिस्याद्वी पवित्र का॥
श्रीयाद्कीपूजयामि नमः॥ ॥
क्काय थवश्मन्त्रनवलि॥ ॥
॥ ७ ॥
क्षिनमस्कायाग्रंथि २१॥ ॥
मन्त्र॥ ॐ गंॐ स्कुँ स्क्षौं गक्ष्स
वसुंदविक्षी ल्य जवो हाक्षिन
मस्काकृहाविकायपवित्रका॥
नयाद्कांतविस्वयामिपूजया
मिनमः॥ ॥थवश्मन्त्रनवलि
॥ ७ ॥
कैवर्वीयाग्रंथि ७॥ ॥मन्त्र॥ ॥
आसन॥ब्रह्माय नमः॥ कंकि
नी॥ ॥ह्रैं ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ ॥ थ्रोः
महावि पूजक्रं लुं लुं लुं ववी
नित्यावज्रव्यवीय पवित्रकनः
याद्कांत विस्वयामि नमः॥ ॥

थमंत्रनवलि॥ ॥रुणकिया॥
ग्रंथि ७॥मन्त्र थवश्नंस्काय॥॥
थनवलि॥ निपूजयाग्रंथि ७॥
मन्त्र॥थवश्नस्काय॥ वलि॥ ॥
॥ ७ ॥
सिद्धिलक्ष्मीयाग्रंथि ९ नवथ
नु॥ ॥कंकिनी २॥आसन॥ स्कुँ॥
ह्रीं श्रीं वृद्धपना स्वायनमः॥ ॥
रुपवपमन्त्र॥ ॥ॐ यवमहे
सिनी निर्वाणमार्गदर्शी वि॥
षमायव्रवसमनि सकलद
विनाविस्वन्नं नदलनि सर्वा
पदाराधिकवनि सकलण
त्रुप्रमथनि दवि आगच्छ २
दसदस बलानव बुधि वान्त्र
वेणाकृद्नानि, ममसत्रुण मर्द
मर्द खादि खादि त्रिशूलनः
छिन्द छिन्द २ वज्रनजय २
स्कुदय २ न्यायावत्सम सका॥
लमनावथा साधय साधय॥
पवम कावूणिक रुणवनि म
हाकेवव नूप धाविनि त्रिदः
गववनमित सकालमन्त्र॥

वीनाक्षिप्रनयस्त्रूँ श्रीय ३
श्लिमूलस्थानरुद्री ह्राति ३
कार्ययादुकों॥ आनंद
शक्तिकेबवानंद श्रीमहा
विद्याबाङ्गष्ठवी श्रीं
यष्ठिमूलस्थानरुद्रा व
कायययादुकों॥ ॥अर्थ गे न
संपूज्य॥ ३ग क्रीं हृदयाययाद्
कों॥ क्रीं शिरसे स्वाहा॥ हूं शि
खायवाषट्॥ क्रैं कवचायहूं॥
क्रौं नेत्रत्रयायवषट्॥ ॥
वीक्ष॥ अथबालाह्नकल्पया ३
दि॥ कैलासपीठमध्यस्थयादि॥
चतुर्पीठपवित्रकनष्ठ वीक्ष ९
यामियादुकों पूजयामितमधा
वलि॥ आवाहनादि॥ यानिम
द्रा॥ ॥
मूलपदवी सर्ग थि धा॥ मन्त्र॥ ॥
वङ्ग॥ वलि सिद्ध॥ हृदयादि ॥
पत्र ३॥ ॥वाक्ष॥ अथबा
लाह्नकल्पयादि॥ कैलासपी
ठयादि॥ ॥
ऋष्यादिसंग्रथि धा॥ ॥मन्त्र॥ स

मस्तमन्त्रपीठ सिंहासनपी
ठपादेयपीठ कन्यायक ३
त्र संधाकृषसंधाह ३ दिव्यसि
द्धि समयवक्रयाद्कों॥ ऐं ग उ
कानूकोग क्लिंश्रि लूत्स ऐं ३
श्री हृदयाययादुकों॥ वाक्ष॥
अथबालाह्नकल्पयादि॥ कै
लासपीठयादि॥ मूलमन्त्रने
वलि॥ ॥
पतिमायार्ग थि ग॥ मन्त्र थवर
श्मा॥ मूलनेवलि॥ ॥
॥ ॥
दत्तवत्यायाग्रंथि ग॥ मन्त्र॥ ऐं ग
ॐ क्रीं वागप्रद दत्तवत्तिः
वियमर्दिनि सदा व
क ३ त्वीमांसं ३ स्तुयूरूवन ३
म ३ पवित्रकनयादुकों तुवि ३
स्य यामि पूजयामि नमः॥ ॥
थनेवलि॥ ॥
॥ ॥
रुगवलियार्ग थि ग॥ थवरम ३
न्त्रनी॥ स्थय॥ थमन्त्रनेवलि॥
॥ ॥मातृकालयार्ग थि ग॥ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं वर्ज्जनशिखन्कलि
खायै ३॥ ॐ ह्रः धाम्न धाम न
धावामस्वी वज्रनुपायै ॐ आ
कवचायहुं ॥ ॐ ह्रौं ह्रीं महेन
त्रिकायै ॐ धानन्त्रयायवष
ट् ॥ ॐ ह्रः त्रिमि २ त्रिचैवाक्रुक्षम
यैफ्र ॥ अस्त्राय फट् ॥ ॥ वाक्य ॥
॥ कालास्मनात्व याद्दवं रुद्र ६
सू वामका विशो । करंक्लि पंच
समन्त्रपं घर्मयंक समन्त्रमं
॥ मनस्तु क्लिष्ट मक्लिष्टं धर्मपक्ष
क्षमनक्षमं ॥ सर्वास्मिनात्मया
मक्षा यत्रिक्रकान्तु वीक्ष्य या
मि ॥ ॐ पूथ २ मधवर्जन पः
अभ्यवाय वाक्यमंकमनः
मयाकृतानुनाधिकं नमस्तु
सर्वसंपूर्ण्णक्रा यातु स्वीय विः
त्रकान्तु क्षिप्तयामि ॥ वाक्य ॥
॥ ७ ॥
गेगावनालयाधि ३ ॥ मन्त्र ॥ ॥
मूलसकाल छ्रह ला ॥ आसन ॥
ॐ ह्रः खानायनम ३ ॥ सिरा ॥
नाय ३ ॥ ध्यान ॥ ॐ हृसम् संक्षि

नदवं खवर्क्ष नुपसाक्रिमं ॥
एककवक्त्रं त्रिनेत्रं चतुर्भुजाकाद
शधमविशीतमनूपमन्तुवानं ः
च खड्गमं कृष्णवज्र वां ॥ गैरवी
चचनवाद्यं च वचदा रुपयदक्षि
णे ॥ वामस्वदुर्गगपूल धनुः
रूलकपालदा घण्टाकपालः
वैनक्ष श्रुरुद्यारुयदक्षिणे ॥
यदुनवभिनंदानू वामावस्का
ऋदवना एककवक्त्रा त्रिनत्राय
गभूनावर्ण्णविर्ण्णना ॥ द्विभुजाव
चदादक्ष सिंहकाकयस्त्वसूप
नानारुवणसाहाधा सवक्रन
कुवक्रनं ॥ ऊं बवानन्दनूपाय
श्रुवाश्रु स्वधकार्लिंगना ॥ एवं ६
ध्यात्वा महादेवं [illegible]
मानवा ॥ ॥ अर्घ्याव ॥ वज्र ॥
ॐ श्री विजयादवी पादुकां ॥ ॥
श्री गुह्यिकादेवी ३ ॥ श्री गुह्यवा
सिनादेवी ३ ॥ श्री गङ्गनीदेवी ३ ॥
श्री स्कन्दनी ३ ॥ श्री माहिनी ३ ॥ श्री
गाकर्षनी ३ ॥ ॥ वशिनी ३ ॥ ॐ ग
गानन्दशक्तिर्जैवानन्द

जाप्रसीदा दत्ता। थक्कवि म
थाशिनी नीं ऊ वधि रूवधि
।भेवविदिगवरि अवकाञ्च
विघ्नकृवि सेन्द्रस्थश्च नवाः
कवि हीय थाप र्यनामी वलि
शुद्ध रममसिद्धिकूर्चस्तु फुट्
स्वाहा॥ ॥वाक्य॥ ॥
॥ ॥
त्रिरवीश्रयार्थ थिव॥ मन्त्र प
ऐं ग [illegible] श्री वृद्धरवञ्जमाहः
रव [illegible] ञ्जमन्त्रस्वञ्जत्रिरवः
ञह [illegible] दाविकायपविका
यपविद्रवनपादूकांञ्जवि
च्छयामि पादूकांपूजयामि ॥
वलि॥ आवाहनादि॥ त्रिरव
ञमन्त्र॥ ॥
गनामूलस्थानयार्थ थिउ॥ ॥
आसन॥ आधारशक्त्यादि
उ॥ कंकिनीरे॥ वृद्धस्नाय
श॥ सिंहासनायश॥ मन्त्र॥ मूल
यान्यासङ्कन्यासवल्लद॥ ॥
ऐं किलिरविश्वकाङ्कनायद्र
४अस्त्रायफट्॥ ऐं नमाह्र
गवनिंदलीमलायेकांश्रीऐं

गुह्यायपादूकाॅ॥ ऐं ग श्री कु
ब्जिकायै कुलदीपायै कांश्रीम
न्यायै उ॥ ऐं ग कांकीं हूं वर्षे
वलिरव हूंश्री मध्यमायै उ॥ ऐं
घोरकृघोरगृघोरामुखीव
क्रूपायै कंश्री अनामिकायै उ
ऐं ग ह्सौं ह्स्कौं महन्मातिकायै क्रौं
श्री कनिष्ठकायै उ॥ किलिरवि
श्वकाङ्कनायद्रः४ अस्त्रायफट्॥
ऐं ग नमाह्र गवनिंदलीमलायै
कांश्री ऊर्ध्ववक्त्राय उ॥ ऐं ग श्री
श्री कुब्जिकायै कुलदीपायै ॥
कांश्री पूर्ववक्त्राय उ॥ ऐं ञ्कंकीं हूं
श्री वर्षेवलिरव हूं श्री दक्षिणव
क्त्राय उ॥ ग घोरकृघोरगृघो
रामुखीवक्रूपायै श्री उत्तरव
वक्त्राय उ॥ ग ह्सौं ह्स्कौं महन्माति
कायै कां श्री पश्चिमवक्त्राय उ
॥ ऐं ग किलिरविश्वकाङ्कनाय
द्रः४अस्त्रायफट्॥ कृनिवद्ध कः
न्यास॥ ऐं ग नमाह्र गवनिंदल
मलायै कां श्री हृदयाय उ॥ ऐं
ह्स्कूं श्री कुब्जिकायै कुलदीपा
॥ ऐं कां श्री शिरसे स्वाहा॥ ऐं

ॐ३॥ॐ ग गँ प्रचण्ड दक्षि न
हस्तमनिबंधे ३॥ॐ ग घँ ग्रि ः
बद क्षि हस्त ३॥ॐ ग ङँ चक
न्द्र दक्षिन कलांगुलिषू ३॥
ॐ ग चँ कुम्भ वामस्कंधे ३॥ॐ ग
छँ एकनत्र वाह्रु दण्ड ३॥ॐ ः
जँ चतुर्मुख वामस्तमनिबं ः
धे ३॥ॐ ग झँ गजस वाम ह
स्तपादुकां॥ॐ ग ञँ सम्भ सपू
वाम हस्त कलांगुलिषू ३॥ॐ
ग टँ लोमस बद क्षिन स्फि ॐ ः
३॥ॐ ग ठँ लांगुलिस दक्षिन ः
बुपाद ३॥ॐ ग डँ दारुक दक्षि
नजांघे ३॥ॐ ग ढँ गुह्नु नासि स
दक्षिनकंपायी ३॥ॐ ग णँ डमा
कान्त दक्षिन पाद ३॥ॐ ग तँ
आखबारि स वाम स्फि ३॥ॐ ग
थँ दिक्षु वामानबाह ३॥ॐ ग
दँ क्षत्री स वामजानी ३॥ॐ ग धँ
धू [illegible] वामकंपायी ३॥ॐ ग
नँ नमथ वाम पाद ३॥ॐ ग पँ
पलादिन दक्षिन पार्श्वे ३॥
ॐ ग फँ गिरिबिस वाम पार्श्वे ३॥
ॐ ग बँ स्कन्ध पृष्ठ बँस ३॥ ॥

६॥६ [illegible]

॥ॐ ग भँ रुद्र [illegible] नाभि मध्ये ३॥ॐ
॥ॐ ग मँ महाकाल हृदय ३॥
ॐ ग यँ वालि सत्व वम धे ३॥
ॐ ग लँ पिनाकि समांस ३॥॥
ॐ ग वँ [illegible]नन्द [illegible] मध्ये ३॥
ॐ ग षँ गणानन्द मऊमि ३॥ॐ
ॐ ग सँ [illegible] ३॥ॐ ग हँ ला
कुसवनाभाव ३॥ॐ ग क्षः ब्रो
धपाद [illegible] मध्ये पादुः
कां॥ ॥ॐ ग [illegible] वालि [illegible] व
[illegible] वि कायपादुकां॥ पूज ः
यामि नमः॥ ॥ [illegible] य वा [illegible]
॥ सर्व्वमन्त्राधिकारेन्य पञ्च
पञ्च पवायि सर्व्व काम्य विपा
विनाय त्रिरत्न [illegible] कुलक ः
लकौली सनाथ [illegible] ः
मदं [illegible] ज्ञानि क्रियाणिकि
य सत्व [illegible] मायि सर्व्वम ः
[illegible] गं [illegible] वना [illegible] न
पादुकां [illegible] यामि नमः॥
॥ ॥ योगिनी बलि विधि॥ ॥
ॐ ग यक विधायोगिनीनां पी०
गा [illegible] गा सह गा [illegible] गा ः
गा [illegible] गा स [illegible] गा प्र संदाह

कां॥ ह्रैं ग० पृष्टिमाये वा यमन
हृदयं यादुकां॥ ह्रैं ग मंसमकाचि
न्थे दक्षिन हस्त कलांगुली पा
दुकां॥ ह्रैं ग ॐ कुर्द मो वाम हस्त
कलांगुली यादुकां॥ ह्रैं ग वंदी
यि न्थे शूलदण्ड दक्षिन हस्त ३
॥ ह्रैं ग गं डये यो त्रिशूलायेद
क्षिणहस्ते ३॥ ह्रैं ग ठं कपालिन्यै
कपाल वाम हस्त ३॥ ह्रैं ग यँ पा
चन्ये हृदयमध्ये ३॥ ह्रैं ग
स्त्रिकाये ग्रामाजपत्र ३॥ ह्रैं ग सँसु
वृत्तिमन दक्षिण पार्श्वे ३॥ ह्रैं ग प
०० ल्का गल्के वाम पार्श्वे ३॥ ह्रैं ग
हँ कुम्भ गल्य दक्षिन स्तन ३॥ ह्रैं ग
लँ पृतनाये वाम स्तन ३॥ ह्रैं ग क्ष
ऋँ ग्र भाये पयद्वयं ३॥ ह्रैं ग ६
बलभाद्रक्षे उदर ३॥ ह्रैं ग कों
लं डाकिन्ये नाक्षिमध्ये ३॥ ह्रैं ग
मँ महाकाल्ये निनम्ब ३॥ ह्रैं ग गँ
गकुसुमायुधाये गुह्य ३॥ ह्रैं ग
ॐ गुह्यादेवी गुह्य ३॥ ह्रैं ग गँ
माबादक्षे उरुद्वयं ३॥ ह्रैं ग नँ
स्तनाये दक्षिण जानौ ३॥ ह्रैं ग त्र
त्रियाये वाम जानौ ३॥ ह्रैं ग डाँ या

याये दक्षिन जंघायां ३॥ ह्रैं ग डौ
नाकृत्ये वाम जंघायां ३॥ ह्रैं ग दं
दकृष्णे दक्षिन पादं ३॥ ह्रैं ग रुं
कृष्णक्षिन्ये वाम पादं ३॥ ह्रैं ग
ॐ श्री मालिनी देवी श्री पादुकां पू
जयामि नमः॥ ॥
ह्रैं ग गुँ श्री कमण्डलस्थाद पादुकां पू
ह्रैं ग ऑं स्वनक मण्डल वक्त्र ३॥
ह्रैं ग ॐ धु क्षिमस दक्षिन नेत्र ३॥
ह्रैं ग ॐ त्रिमूर्ति वाम नेत्र ३॥
ह्रैं ग हुँ श्रुमवीस दक्षिण कर्णे ३
ह्रैं ग उ अर्घीस वाम कर्णे ३॥ ह्रैं
ग सँ किस दक्षिन नासापुट ३॥
ह्रैं ग रुं बहुमि वाम नासापुट
३॥ ह्रैं ग ठँ स्थानु दक्षिन गण्ड ३
॥ ह्रैं ग ढँ रुद्र वाम गण्ड ३॥ ह्रैं ग
ॐ सन्निस अध्वदसनपंक्त्ये ३॥
ह्रैं ग तु निसलुड्ड दशनपंक्ती ३
॥ ह्रैं ग ॐ सथाराम जु श्रोत ३
ॐ॥ ह्रैं ग शूनत्र दिसमुद्धी ३ ॥
ह्रैं ग शूक वसमालमध्ये ३॥
ह्रैं ग ॐ महासन जिह्वायां
॥ ह्रैं ग कँ ख्राथ दक्षिण स्कन्धे
॥ ह्रैं ग खँ यण्ड दक्षिन बाहु

दुंमिश्रीवज्रदण्डक्षेत्रपालवूपा
किनश्रीकुङ्किकानन्ददेवयाद्द:
कौं॥ क्षुंश्रीमहाबलद्वीपधर्म्म
देवी महाकायक्षेत्रपाल:
धाँश्रीशववाचक्रलेश्रीमहा:
यशायववी(०)श्रीवन्दिनाम्ना:
देवीश्रींवन्दिसनाथश्रीमार्नंगि
नीम्बादेवीश्रीमदधिसानन्दद
वश्रीकुकालिमहाकालिकाद
क्षश्रीपालिनीनाथक्षेश्रीअमृत
वल्लीश्रीमहादूमिनीपर्व्वतश्रीवि
जयनाथक्षेत्रपालश्रीसर्व्वज्ञा:
यिश्वकर्म्मासालामितश्रीकुङ्किका
नन्ददेवभैरवलायाविघ्नकेन्तु
वीढक्षयामियाद्दकौं॥पूजयामिनि

॥ ३ ॥

नीगमवनाववंथिग॥मक्र॥मालि
नी॥शब्दवाचि॥ त्रैं ग नन्दिनीये
शिखायाद्दकौं॥ त्रैं ग थ अमृते
ऊर्द्ध्वशिखामालायायाद्दकौं॥ त्रैं ग
ॐ निवृत्ये पूर्व्वशिखामालायीया
द्दकौं॥ त्रैं ग अ प्रतिष्ठाये दक्षिणः
शिखामालायाँयाद्दकौं॥ त्रैं ग ॐ वि
द्याये उत्तरशिखामालायाँयाद्द:
कौं॥ त्रैं ग ॐ शान्त्येयश्चिमशिखा:

मालायाँयाद्दकौं॥ त्रैं ग ॐ वामञ्ज
ये त्रिनीयमन्त्रयाद्दकौं॥ त्रैं ग धं:
प्रियदर्शन्ये नत्रद्वयाद्दकौं॥ त्रैं:
गर्नं नावायन्थ्ये कर्ण्णद्वयीयाद्द:
कौं॥ त्रैं ग ॐ माहन्ये दक्षिणक:
र्ण्णरूपनेयाद्दकौं॥ त्रैं ग ॐ पश्च
यवामकर्ण्णरूपनेयाद्दकौं॥ त्रैं
ग ॐ सुन्दर्ण्णनासापुटद्वय
याद्दकौं॥ त्रैं ग वं वज्रिण्ये वक्त्र
याद्दकौं॥ त्रैं ग कं कराल्ये दंष्ट्र:
द्वयीयाद्दकौं॥ त्रैं ग खं कालिको
पुंड्वद्दशनपंक्तीयाद्दकौं॥
त्रैं ग मं लिंबाये गल्लोदर्नय
क्षौयाद्दकौं॥ त्रैं ग धं धात्रीये:
ढुंढीद्वयाद्दकौं॥ त्रैं ग दं दूतीबाग्न
ध्रेष्ठयाद्दकौं॥ त्रैं ग ॐ मायाय
दवी जिह्वायीयाद्दकौं॥ त्रैं ग:
वागेश्वरी याय्या याँयाद्दकौं॥
त्रैं ग वं ढ्लि खिवा दन्ये कण्ठया
द्दकौं॥ त्रैं ग कं करवीन्ये दक्षिण
वाहुशिखरयाद्दकौं॥ त्रैं ग यं:
वायव्यापौये वामवाहुशिखर
याद्दकौं॥ त्रैं ग जं लामाये दक्षि
णवाहुदण्डयाद्दकौं॥ त्रैं ग रं द्वि
नायकाये वामवाहुदण्डयाद्द

दवपादुकां॥ श्रीकुद्दिलानना
थ लाकानन्ददेवपादुकां॥ श्री
वम्भथे सुश्मानन्ददेवपादुकां
॥ श्रीमम्भाझादनाथे यश्मानन्द॥
देवपादुकां॥ श्रीदुम्मनाथे ल
यानन्ददेवपादुकां॥ श्रीमाहे॥
नाथे जयानन्ददेवपादुकां॥ ॥
॥ ॥वाक्ष॥ श्रात्मनत्वाधि
कारवन्धुपदापदार्थेवज्ञानव
व कुकाल्लूं याविनायमलग्रकुल
सरववनाथजन्मतुर्यम्यहे श्रि
यागकिय सत्वाये आत्मनत्वप
वित्रकनपादुकां॥ तु विसुया॥
मि॥ ॥ ॥
मखलायाथे ... ॥मन्त्र॥
स्यूं श्रीजवनदीपवलादवी श्री
वृश्कत्रपाल ओं श्रीजनयले
श्रीजातियानमहामुद्रापि० श्री
जातियाम्नादवी श्रीजातिसता॥
थदवी श्रीव कामाङ्गवी श्रीआ
धाविसानन्ददवी श्रीकुकावि
मर्दनाविकावृक्ष श्रीउजयगि
वियर्बन श्री वटकनाथक्षत्रपा
लपिउ श्रीकुब्जिकानन्ददेव॥
पादुकां॥ ॥ श्री वन्दघायक्षाम
बाम्वादवी गुगंधक्षत्रपाल॥

श्रं श्रीत्रकायुले श्रीजालंधर॥
महामुद्रापी० श्रीजालाम्बाद॥
वी श्रीजाली सनाथ श्री कलावा
म्बादवी श्रीकुवङ्गसानन्ददव
श्रीकुकालिमर्दकालिकावृक्ष
श्रीहिगिवियर्बन श्रीजमदग्नेक्ष
त्रपालय श्रीकुब्जिकानन्ददेव
पादुकां॥ श्रीजवनद्वीकल॥
नीदवी श्रीगोपालक्षत्रपाली
यदत्र श्री द्वायवक्रुगे पूर्ण॥
गिरीमहापी० पूर्णाम्बादवी॥
श्रीपूर्णा सनाथदव श्रीसन्त्रा॥
कामाम्बादवी श्रीवक्रीसानन्दद
व श्रीकुकाविमर्दकालिकावृ
क्ष श्रीविविनीवृक्ष श्रीजन॥
लगिवीयर्बन श्रीविमलक्षत्र
पालवपाजित श्रीकुब्जिका॥
नन्ददेवपादुकां॥ ...
दीयधर्म्मादवी श्री ... मका॥
कायक्षत्रपालायवं श्रीकलि
ङ्गेकामरूपमहामुद्रापी०
श्रीकामवियाम्बादवी श्रीका
मिसनाथदव श्रीमहाकुम्भा॥
म्बादवी श्रीमदधिसानन्ददव
श्रीकुकालिमर्दकालिकावृक्ष॥
श्रीविलावृक्ष श्रीस्वमगिविय

ह्स्क्षाङ्गनाथेन्द्रं श्री यत्रायत्रव
क्राये पादुकां॥ ॥श्रूयात॥व
क्रां॥ ॥वाक्य॥शिवनन्दाधिकां
वत्ते यवाथवुद्रकाक्षेव पालि
नाय मूल श्रूकुलसरवचनाथ
ह्रम्ह्रं ह्रूं स्थं श्रूह्रं॰ं ऽक्षण कि
थ सर्वात्मनालिवमन्दयवित्रः
कलनुविन्दयामि पूजयामि॥

॥ ए ॥

विद्यानन्दयायौं ॐ ३६ ॥मन्त्र॥
वमिलित्रयश्रवि गनुमाकुगव
मि ह्क्ष्रौं कुकि कायेक्रांक्रींक्रूं धार
श्र धारश्रधावामृरविह्स्क्ष्रौं ह्स्क्ष्रौं
किनि रवि विर्यपादुकां॥गनमाकु
गवनि ह्क्ष्रौं कुकि काये क्रांक्रींक्रूं
दु३त नमश्रूधावामरवी ह्स्क्ष्रौं
ह्स्क्ष्रौं किनिरविर्यपादुकां॥गन
माकुगवमि सिद्ध क्रौं क्रीं क्रूंः
कुकिक क्रौं क्रौं
क्रूं स्वगेनि धाव श्रूधाव श्रूधा
वामरवि किनिरविर्यपादुकां॥
गनमाकुगवमि हलमलाये ः
क्रों श्री हृदयायपादुकां॥गु क्रूं
कुकिकाये कलदाग्रोथेक्रौं
श्रीनिवसस्वाहा॥क्रांक्रींक्रूं वर्व
वगिथायेधाम्बद॥गधावश्रूः

धावश्रूधावामरवी वृक्रूष्पाः
येक्रूं श्रीकवरायक्रूं॥ह्स्क्ष्रौं मक
कावि काये क्रों श्री अनन्तयाथेक्रूं
वम्हठ॥ग किमिश्विर्य कामः
नाथेन्द्रः श्रूस्थायरूं॥ ॥
वाक्य॥विद्यानन्दाधिकावे श्रूः
श्रूयवायवि ह्स्क्ष्रवविक्रुकाक्षेः
वयालिनायश्रूकुलसर्वनाथ
थङ्ग्मन्तु स्थं श्रूह्रं ऽक्षाणन्क्यवि
द्यानन्दयवितकनुविन्दयाः
मिपादुकां पूजयामि॥नमः॥

॥ ए ॥

श्रीनन्दयायौं ॐ ३६ ॥ ॥
मन्त्र॥धातस॥श्रूकुलादि॥श्रू
कुलाये श्रूयहानन्ददेवपादुः
कां॥श्रीकुलाये मित्रानन्ददेव
पादुकां॥श्रीकुलायेविद्यानन्द
देवपादुकां॥श्रीगनाकाथेव ६
श्रानन्ददेवपादुकां॥श्रीसिद्धाः
ये सिद्धानन्ददेवपादुकां॥श्री
कुलाये विमलानन्ददेवपादुः
कां॥श्रीकुलशुदयाथेलाको
नन्ददेवपादुकां॥धीगकाथेः
डलमानन्ददेवपादुकां॥श्रीः
सानारवाथेडरूवानन्ददेवपा
दुकां॥श्रीविमृश्येश्रूयानन्दः

नवात्मा गुरु मण्डल रुद्राचि
काथे पादुकां पूजयामि ॥२॥
॥ अर्घ्यनपूजयेत् ॥ ह्रीं हृद
याय पादुकां ॥ क्लीं शिवयुषा
हा ॥ ह्रूं शिखायै वषट् ॥ ह्रैं
कवचाय हूं ॥ ह्रौं नेत्रत्रयाय
नमः ॥ ह्रः अस्त्राय फट् ॥ ॥
॥ ॥ अथावर्णथथान्तं ह्रीं
थाव थाव थावन्त्य हूं फः
सर्वनमः सर्वसर्वे ह्रैं मुः अं यं यः
द्रव्यपादुकां ॥ ॥ त्रिवक्त्रकू
क्लिन्नी ह्रूं मे ला ग्रां कर्षनी ह्रीं
कामांगद्रावनी क्लिं ब्लूं मदाः
काककाविनी त्रैं क्लीं सौः सः
श्रीपादुकां ॥ ॥ ऐं नमो कुन्
वनिक्षुं कुक्कि कायै ह्रां ह्रीं ह्रूं
थाअन्धथा वाम स्थिर्डं स्त्रीं कि
निरविर्द्विपादुकां ॥ ॥ स
मस्तमंत्रपीठ निलासनपीः
ठपीठे ब्रपीठ अस्त्रायक्षेत्र
सीदाकाय संदोहः विद्यावज्र
समयसिद्धिपादुकां ॥ ॥ ऊर्ध्व
नेर्ऋगर्ति विल्वं ब्रश्राकृय्या
यपादुकां ॥ वलि ॥

श्रावाहनादिजानिमुद्रा ॥ ॥
वाह्य ॥ अथ वालाहा कल्पयाः
दि ॥ कैलाशपीठ मध्यर्धीयादि
भमलायचित्र कमपादुकां पू
जयामि ॥ ॥
॥ गुरुपङ्क्तियाय ०१ ॥ ओघधी
याग्री ०४ ॥ ॥ श्रीकण्ठनाथग्रीं
०३ ॥ ॥ ब्रह्मा विग्री ०४ ॥
कुशवनियाग्रीं ०३ ॥ ॥ गुरु ॥
निगुरुग्री ०४ ॥ ॥ वागेश्वरी
ग्री ०४ ॥ थक थव श्मक्रमेव्रुया ॥
॥ ॥
॥ कम्मियानिवमलग्री ०४ ॥ ॥
मुद्र ॥ अथाव ॥ वज्र ॥ वनिश्वी ॥
ऐं नमा कुश वनि दक्षिकमलाय
ह्रां श्रां ऊर्ध्ववक्त्राय पादुकां ॥
गह्रूं कुक्कि कायै कुलदीपायै ॥
ह्रीं श्रीं पूर्ववक्त्राय पादुकां ॥ ह्रां
ह्रीं ह्रूं वर्ववनिखदं दक्षिणवः
क्त्राय पादुकां ॥ गथाव ङ्गथावाः
मवामरविवक्तूपायै ह्रां श्रीं
ऊर्ध्वं व वक्त्राय पादुकां ॥ ह्रौं
ह्रीं मत्तकाविकायै ह्रां श्रीयक्षि
मवक्त्राय पादुकां ॥ शिखिरवि

लाख वल्यथाधि ॥ ॥ऐं लास
यी ० मध्यष्ठे कायमानन्दचित्र
ह्वा । वनुष्यो ० समायुक्तं याग्नि
सिद्धिसंज्ञकं ॥ आमन्त्रिताभिः श्रीः
लीं श्रीं क्लीं ह्रीं सहरुं वं वं । गृः
ह्णन्तु वव दथं । गन्धधूपादि यु
क्तं ॥ वह्कक्षत्र समायुक्तं म
यक्षत्र समन्वितं । नवषात ससि
द्वाधु गुर्वग्निचय समन्वितं ॥ आः
मन्त्रिताभयारुह्मा । गन्धपात्र पः
वित्रकं । विद्यापी ० समायुक्तम
थाश्वेस्वर्यवीगमा ॥ आमन्त्रितोः
मयासर्व्वा पवित्रं दाषनागवाः
ता ॥ श्रीं क्लीं लीं गनाथदव श्रीं कृः
क्लि काम्या पादुकां ॥ नं नमःवमाल
पवित्रक नयादुकात्रु वीक्षयाः
मी ॥ ह्रुय वाक्य श्री संलीन ॥ ॥
॥ ॥
भषलाश्रीथ ॥ ॥मन्त्र ॥ ॥
गुरुम् मण्डल पूजनह्का ॥ ॥
यद्मासनायपादुकां ॥ नवाम्रा
यपादुकां ॥ ॥ आन ॥ यद्माः
सनसर्वस्व दमवक्षेत्र लाः
वनी । अवत्सभमहादीर्घ सर्व्व

लक्ष्य संयुतं ॥ ध्यवर्णपूर्व्व
क्रान्तु दक्षि ताम्रक्षाक्षिनं
॥ ॐ लब्ध वीन वर्णस्या लद्धूर्द्ध्व
वक्रवेक्षिनं । वक्रास्यो दक्षिः
धूम्र स्वनमुक्त भवव ४ ॥
गदूर्द्ध्वी नवर्ण चयी नस्याक्ष
ष्कदक्षि ॥ वक्रमर्दनमिः
याक्ष तदूर्द्ध्वसनमलमं । गृह्या
दनन्तु जादवं यादं ध्रा हावः
दृष्टिनं ॥ बन्नरुष्ट कधवंदः
व । त्रिशूलमं कुंभकथा ॥
कमण्डलीं प्रष्ट त मनुख द्वां
गमवया । वानध्यनुससंज्ञकं
तमवृषभसा क्षिनं ॥ वर्ग यः
वगदायानि वबदारुयसाक्षि
नं ॥ कायविन्दुधवंदवं नानो
लंकाल क्षिनं ॥ सर्वयीनरु
वबक्त मासनगुवसंक्षिता ॥
एवंवृपनवामाने मण्डलंतु
वृमण्डलं ॥ आयधस्तु यह का
त्मा । क्षिप्रसिद्धि क्षिमानवा ॥
ध्यानं पूर्ष्ठपादुकां ॥ ॥
श्रा न क्षि रु वबान्
न्दवी । याधिफथ

र्थना॥ श्री नियमाग्यादि ३॥ ॥
ॐ तिस्रो धिवासने विधि समाप्त
॥ ८ ॥
गुरु नमस्कार॥ ॥जलपात्र
पूजा॥ ॥अर्घपात्र पूजा॥ ॥
तनशुद्धि॥ आत्म पूजा॥ ॥
पूनि कादम्र्ष हय॥ ॥थवरम
न्त्रनं॥ ॥कीकिलि आदिनं पि
वनं स्थयक लस्थायमालक
सकलन्ना॥ ॥
जलपात्र॥ ॥अर्घपात्र पूजा॥
यंबवलि॥ ॥बीगाड्वन॥ ॥प्रि
थवद्र॥ दीग पूर्व्व दिशुंगा मार्क
॥ ॥
क्षत्रग्रं ठिगा॥ ॥बटुक ग्रं ठिग
॥ ॥गणग्रं ठिगा॥ ॥थवरमन्त्र
नं स्थाय॥ ॥वलि नां थवरनं वि
य॥ ॥कलसग्रं ठिगा॥ थवर
मन्त्रनं स्थाय॥ ॥कुन्हग्रं ठि ४॥
थवरमन्त्रनं॥ ॥महापात्रग्रं
ठिगा॥ थवरमन्त्रनं वलि॥ ॥
त्रिगुद्धि ग्रं ठि४॥ ॥गुरु मण्ड
लयं थिगा॥ ॥गंगायनालग्रं
थि ४॥ ॥मन्त्र॥ द्वादशाङ्ग॥ ॥
सतङ्ग॥ ॥ॐ सिद्धार्थे पादध

यं पादुकां॥ ॐ महार्थे ज्ञानद्ध
यं पादुकां॥ ॐ ललाटे गुरुक्ष्या
दुकां॥ ॐ दिव्यार्थे नासीया द
कां॥ ॐ मोलनी हृदयाय पादु
कां॥ ॐ शिवाय कण्ठ पादुकां॥
ॐ वममस्ताय मन्त्र पादुकां॥
ॐ नासाम्बुमार्थे नासापट द्वयो
पादुकां॥ ॐ कटकार्थे वर्णद्ध
यं पादुकां॥ ॐ हविक्षसियक
च पादुकां॥ ॐ ऌ सरवशिवनी
पादुकां॥ ॐ शिखादगाङ्गन्यास
॥ ८ ॥
ॐ सर्व्वज्ञ नायक हृदयाय पादु
कां॥ ॐ अनन्तनन्द मालिनी ह
फिलि वसस्वाहा॥ ॐ अवदव
दनि अनादि बाधनी शिखाये
वौषट्॥ ॐ वज्रनी वज्रधराय
स्वमन्त्र कवचाय हुं॥ ॐ ना वा
नियऌल फगकय सरू अनन्त
विन्द नेत्रत्रयाय वषट॥ ॐ न
मस्तस्य अनन्त शक्ति क्लिन्न महा
पाशुपताय अस्त्राय सर्व्व फट
यद्रुद्र॥ ॥ॐ शिखङ्गन्यास॥
॥ ८ ॥
ग्रासंवली॥ ॥वाक्य॥ अघवा

।सालि धूंयमिगृह्नानि यजमा ः
नायूह्वधय॥संनान्तुयिवदत्ती
न सन्ना वाञ्छन्थे वद्य। यज
मानसंतुनार्यं सुपूत वस्तूवास्य
वीवकन्तु सर्वदादव कृयवा
यनमस्तुन॥ गुव्वमिस्नावयदा
कवन्तु॥ ॥
कन्तुव॥ कयूव॥ कुंकुम॥ श्री
खण्ड॥ थमभिश्रिनमभ्वनयः
विश्वर्कवयधन॥ ॥अधिवा
सनगूयुद वार्वेनयाद्या कांथः
नेक्रसुयैलय॥ ॥
॥ ॥
जलपात्र॥ ॥अर्घपात्र॥ लिंग॥
बलि॥ ॥पञ्चवलिग॥ ॥त्रिध
वज्रा॥ ॥घिग०॥ ॥कयस॥ ॥
कलश॥ ॥पात्र॥ ॥त्रिशुद्धि॥ ॥
गुथूमण्डल॥ ॥गंगावलाव॥
गुह्यपक्षि॥ ॥डाबधी॥ ॥त्रीक
लनाथ॥ ॥ब्रह्मान्यादि स्थाह॥
डग्रवन्यया॥ ॥वागेश्वरि॥
कर्म्म॥ ॥त्रिखण्ड॥ ॥मूलः
स्नान॥ ॥स्वस्ति॥ ॥कुगवनि
॥ ॥अधाम्नाय॥ ॥माया॥ ॥
व्हीन्नमस्का॥ ॥केवची॥ ॥मि

पूय॥ ॥सिद्धिलक्ष्मि॥ ॥त्रिपु
रसुन्दरी॥ ॥कालि॥ ॥
थवणीक्रमीकृय॥ वाक्य॥ ॐ पू
य वालाहोकल्प्ययादि॥ अध्या
दि॥ आमन्त्रिनादिजवनि सङ्कल्प
थांगलेख्यवि। मक्रपीलाकया
लिङ्ग सहोनयविवाविक॥ नि
वेदयामन्तुतुयं अयमन्तुपः
चित्रकी। नियमक्षु कवी कामि
पवमण्डववाञ्छया। त्रैपूवरम
धवलेन पवमण्डवाय वाकर्म
जगर्भमया कृमानूनाधिवां नम
स्तुसर्वसंपूर्णक्रियास्तुयं अधि
वासन पवित्रकनतवीकृयामि
॥ ॥पूमिकास्वयया कांथ॥
आत्मअधिवासनजपलयमन्त्र॥
॥अतक॥ ॥वलिमी॥ ॥नवा
न्ना॥ ॥गायत्री॥ धावन॥ ॥वाक
॥ ॥आमन्त्रिनादिदवालयादि॥
॥ ॥नवान्नामन्त्रन अत्मअधि
वासनमायाक्यन॥ ॥
त्वाकमहावलिनधूनक॥ ॥
धूप॥ दीप॥ नैवेद्य॥ जाप॥ आ
रति॥ ॥श्रीसवर्ला॥ डक्लुर्लावृज
॥ कृतगंधादि॥ ॥संमय॥ नः

सम्मिवासनयाव पूजायाय॥
॥ ॥वतुर्संकावयाय॥ ॥
ॐ नमाभगवति धूँ कुक्कि का॥
येजाँ क्रीं धावन धावनधा
वामुखी स्कीं किमिर विर्ष्वया
दुर्गा॥ निबीकर्ण॥ ॥किमिर
विर्ष्वकाकनायर्कं अकायरुद्र
॥धाकर्ण॥ ॥धावनधावन
धावामुखि स्वतन्त्र कवचायर्द॥
अवगुंश्रुनी॥ ॥किमिरविर्ष्व
काकनायर्क अकायरुद्र॥ मात
नी॥ ॥ङ्मिवतुर्संकावे॥ ॥
॥ ए ॥
ॐ ह्रीं पवित्रायनमः॥ ॥
ॐ ह्रीं पवित्रकमूर्त्तयनमः॥ ॥
ध्यान॥ वर्ज्ञविधाकलपुष्प कु
गुलाविधिकृषिता॥ कलयाव
मनाश्रया एवं कलित्तुपश्रमीस
र्वज्ञपाविनागुजा गुह्यतां गकः
कुगुर्वां॥ मूर्त्तिपवित्रकसेव यो
ग्रेनालस्मितास्मकृत॥ ध्यानपूर्वा
॥ ॥ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं पवित्रकना
गायनमः॥ पताङ्गनसंपूज्य॥ ॥
प्रतिसीव्रय ॐ नमाभगवति

ॐ कुक्किकाये ह्रां ह्रीं ह्रूं धावन ॐ
धावनधावामुखि स्कीं स्कीं किमि
र विर्ष्वयादुर्गा॥ ॐ नमाभगवति
ॐ कुक्किकाये ह्रां ह्रीं ह्रूं ॐ
नेनमधावामुखी स्कीं स्कीं किमि
र विर्ष्वयादुर्गा॥ ॐ नमाभगवति
सिद्धं ह्रां ह्रीं ह्रूं स ॐ धावन
धावन धावामुखी किमिरवि
र्ष्वयादुर्गा॥ ॥त्रिनन्द॥ ॥
निवमत्वाधिका ह्रीं पवायेलि
मसूयादुर्गा॥ आत्मतत्वाधिकाः
पवं ह्रीं ह्रूं ह्रां ह्रीं रुद्र प्रवायेरुद
यायपादुर्गा॥ धावञ्जाँ धनमधा
अर्द्धं धावनपरुधावामुखी की
मकीयनिवमः शिवश्रूरस्वत
रुद्र ह्रीं हूं रुद्र वि धायतत्वाधि
कावनमयवायवायेस्वबकामः
यादुर्गा॥ ॥नवात्मामूल
मंत्रजपलय॥ ॥गायत्रिधाव
न॥ ॐ कुक्किकायविद्महे कु
ब्जीकायधीमहि तन्नो कुक्कि प्र
चोदयात्॥ ॥मात्र॥ ॥प्रसर्वली
प्यादि॥ ॥प्रतिष्ठा॥ प्रतिष्ठि
तालिङ्गवर्ण मृत्प्रतिष्ठागुप्तवर्यं

यप्रमाधिपतयनमः॥एर्वंव ः
लि॥ ॥नेमत्थ॥गभूताम्ना॥
थनमः॥नवाम्नायनमः॥ ॥
ॐ अहतासमहाक्षेत्र क्रोदमर्ह
रवाय वेष्क वीशक्तिसहिता
य अग्निजिह्वाक्षत्रपालाय वाङ्क
साधिपतयनमः॥एर्वंबलि॥ ॥
देवूत॥महिषाम्नायनमः॥यम
वाम्नायनमः॥ ॥ॐ ज्वयन्विपु
वमहाक्षेत्र उन्मत्तमहाकैरवाय
वाराहिशक्तिसहिताय काला
क्षक्षत्रपालाय जलाधिपतयन
मः॥एर्वंवलि॥ ॥वायुव्य ॥
गजाम्नायनमः॥हंसीनाम्नायन
मः॥ ॥ॐ वज्रिप्रवमहाक्षेत्र
कापालीसमहाकैरवाय इन्द्रा
यणीशक्तिसहीताय कालाक्षक्ष
त्रपालाय पवनाधिपतयनमः॥
एर्वंवलि॥ ॥कुवेर॥प्रमाम्ना
यनमः॥हयाम्नायनमः॥ ॥
ॐ एकाप्रक्षमहाक्षेत्र शीषनरु
रवाय चामुण्डाशक्तिसहीताय ः
कपालीनक्षत्रपालाय धनाधि
पतयनमः॥एर्वंवलि॥ ॥

ईशान॥नन्दाम्नायनमः॥वृषा
म्नायनमः॥ ॥ॐ देवीकोटम
हाक्षेत्र संहारमहाकैरवाय मा
हालक्ष्मीशक्तिसहीतायहीमवुप
क्षत्रपालाय रुद्राधिपतयनमः॥
एर्वंवलि॥ ॥ऊर्ध॥कूर्म्माम्नाय
नमः॥ ॥ॐ कूर्म्मपृष्ठक्षत्रपाला
य ऊर्द्धाधिपतय [illegible] हाटके ः
श्वरमहाकैरवाय पातालाधिप
किशरीनाय नागाधिपतयेनमः॥
एर्वंवलि॥ ॥अधः॥हंसाम्ना
यनमः॥ ॥तामलक्षत्रपालाय ः
ऊर्द्धाधिपतय कालामालनी
शक्तिसहीताय तामरकैरवा
य सर्वाधिपतयनमः॥एर्वं
वलि॥इति दिगपूजाविधिः॥
॥ ए ॥
नमः कालस॥ ॥कूम्ह॥ ॥मः
हापात्रपूजा॥ ॥कर्म्मावन
याय॥ ॥धूप॥दीप॥नैवद्य
॥जाप॥स्तोत्र॥नित्यकर्म्माङ्ग
कान रवाय॥ ॥यजमानस
स्वस्ति कथाय॥ ॥गिङ्कल ः
कोठलस पवित्र कोर्थदाव ः

ॐ नमः श्रीगुरुपादुका॥
मृथयविद्याचारुनविधि
लिख्यते॥ ॥दवदकास॥
कलदसल॥ ॥साकाल॥
स्वन॥ ॥पञ्चामृतस्नान॥
अलिस्नान॥ ॥थन सिंध्र॥
स्वले॥दछि॥ ॥गगामका
॥अदवाल स्वल॥पंचपम
बाकुण्डिया काथवले॥ ॥
पतवासनव गथयाथ॥ ॥
पवपतिसकलदवाय थव॥
रथायसमय॥ ॥कलस॥
कूसकन॥सिंधमूढ॥ ॥
कुरु॥ ॥पात्र॥दीगवलि॥॥
देद॥निडनि थवरथायसंम
य॥ ॥नित्यकर्म्मयाय॥ ॥
कवा॥दीपु॥थन॥सिंध॥जू
गामका॥ससादका॥स्नान॥थ
गलिगसंवाय॥ ॥धनवसप
विधि॥ ॥ ॥अद्यादि
क्रमानपुष्पफलनयावकी
॥अकन द्योरुत अग्गिनी जौ
दिने विस्यकय॥ कुकिबाद्य
वायमूलश्री पृथ्वीसमर्पयामि
॥ ॥नासियथ॥ ॥

ॐ अद्यादि॥ स्वस्त्यादि॥ ॥गुरु
नमस्कार॥ ॥न्यास॥ कलशपात्र
अर्घपात्रपूजा॥ ॥हंसशुद्धि॥
आत्मपूजा॥ ॥बिन्दुत्रय॥ ॥
मालिनीयथेन॥ ॥[redacted]॥ ॥
पञ्चवलिदद्यात॥ ॥साधन॥
मर्थन॥ श्रीकिय्वकाद्यादि॥ ॥
श्रीसंवर्त्तनिआवाहन॥ ॥त्रिदव
॥ ॥दिगपूजा॥ ॥पूर्वस॥
आसन॥ हंसासनायनमः॥ गका
सनायनमः॥ ॥ॐ श्रृयागमका॥
क्षेत्र अग्निनाङ्ग महाकङ्कवाय व्र
ह्मायनीशक्ति सहिताय हेतुकक्षे
त्रपालाय गुवाधिपतयनमः॥ ॥
धर्मत्रनैवलि॥ ॥आग्नेय॥
छगासनायनमः॥ छागासनायन
मः॥ ॥ॐ वधूनक्षेत्र वधूम॥
हाकेबवाय माहेश्वरीशक्ति स॥
हिताय त्रिपुरान्तक क्षेत्रवाळ॥
त्रपालाय नगाधिपतयनमः॥ ॥
त्रवैवलि॥ ॥दक्षिणकूम॥ ॥
मयूरासनाय नमः॥ महिषासनाय न
मः॥ ॥ॐ कोलापूरमहाक्षेत्र व
टुमहाकेबवाय कामाक्षीशक्ति॥
सहिताय अग्निवेतालक्षेत्रपाला